नवसर्जन संस्कृति

RNI No. GJHIN/25/A2786
NAVSARJAN SANSKRUTI

नवसर्जन संस्कृति

अहमदाबाद से प्रकाशित दैनिक

वर्ष : 01
अंक : 059
दि. 01.12.2025,
सोमवार
पाना : 04
किंमत : 00.50 पैसा

EDITOR : JIGNESHKUMAR PETHABHAI VAGHELA Regd. Office : B/13, Sneh Plaza Shopping Centre, I.O.C. Road, Chandkheda, Ahmedabad-382 424, Gujarat, India.

Phone : 76983 33307 (M) 84859 51747, 70963 33307 ● Email : navsarjansanskruti2016@gmail.com ● Email : navsarjansanskruti2016@yahoo.com ● Website : www.navsarjansanskruti.com

भारत ने पूर्वी सीमा सुरक्षा को दिया नया आयाम: 'चिकन नेक' पर तीन नए मिलिट्री बेस, राफेल–ब्रह्मोस–S-400 की तैनाती से बढ़ी ताकत

(जीएनएस)। नई दिल्ली। भारत ने पूर्वोत्तर राज्यों को देश की मुख्य भूमि से जोड़ने वाले संकरे और रणनीतिक रूप से अत्यंत संवेदनशील मार्ग, सिलीगुड़ी कॉरिडोर या 'चिकन नेक' की सुरक्षा को और अधिक सुदृढ़ बनाने के लिए एक बड़ा सैन्य कदम उठाया है। यह केवल 22 किलोमीटर चौड़ा मार्ग न केवल उत्तर-पूर्वी राज्यों की जीवनरेखा है, बल्कि किसी भी संभावित संकट की स्थिति में दुश्मन के लिए सबसे संवेदनशील लक्ष्य भी माना जाता है। बदलते क्षेत्रीय परिदृश्य और सुरक्षा चुनौतियों को ध्यान में रखते हुए भारत ने इस इलाके को बहु-स्तरीय सुरक्षा कवच से लैस करने की प्रक्रिया तेज कर दी है।

असम, बिहार और पश्चिम बंगाल में तीन नए बेस

सूत्रों के मुताबिक, असम के धुबरी के पास लाचित बोरफुकन मिलिट्री स्टेशन, बिहार के किशनगंज में एक नया फॉरवर्ड बेस और पश्चिम बंगाल के चोपड़ा में अत्याधुनिक फॉरवर्ड ऑपरेशनल पॉइंट स्थापित किया जा रहा है। चोपड़ा बेस बांग्लादेश सीमा से केवल एक किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। ये बेस केवल सामान्य सैन्य अड्डे नहीं होंगे, बल्कि इन्हें रैपिड रिस्पांस यूनिट, पैरा-फोर्सेज, इंटेलिजेंस सेल और हाई-टेक सर्विलांस सिस्टम से लैस एक स्ट्रैटेजिक नोड के रूप में विकसित किया जा रहा है। इन ठिकानों से न केवल पूर्वी सीमा की निगरानी और नियंत्रण क्षमता बढ़ेगी, बल्कि संकट की स्थिति में तत्काल प्रतिक्रिया की सुविधा भी सुनिश्चित होगी।

बांग्लादेश में सत्ता परिवर्तन के बाद भारत की सतर्कता

पूर्वी सीमा पर इस बड़े सैन्य कदम के पीछे क्षेत्रीय राजनीतिक परिदृश्य में आए बदलाव को भी प्रमुख कारण माना जा रहा है। शेख हसीना के स्थान पर मुहम्मद यूनुस के

नेतृत्व वाली अंतरिम सरकार के आने के बाद बांग्लादेश की विदेश नीति में चीन और पाकिस्तान के साथ नजदीकियों में वृद्धि देखी जा रही है। ढाका ने चीन से J-10C फाइटर जेट खरीदने की प्रक्रिया शुरू कर दी है और ड्रोन निर्माण में भी चीन की भागीदारी बढ़ रही है। वहीं पाकिस्तान ने JF-17 Block-C ऑफर किया है। ये घटनाक्रम भारत के लिए पूर्वी थिएटर में सुरक्षा की दृष्टि से अत्यंत संवेदनशील माने जा रहे हैं।

सिलीगुड़ी कॉरिडोर में बहु-स्तरीय सुरक्षा कवच

उत्तर-पूर्वी क्षेत्र में लगभग 4.5 करोड़ लोग रहते हैं और यह कॉरिडोर उनके लिए जीवनरेखा की तरह है। किसी भी संकट की स्थिति में दुश्मन इस संकरे मार्ग को निशाना बनाकर पूरे क्षेत्र को देश की मुख्य भूमि से अलग कर सकता है। इसी कारण भारत ने पारंपरिक रिएक्टिव नीति छोड़कर प्रो-एक्टिव सुरक्षा रणनीति अपनाई है। तीनों नए बेस कॉरिडोर के चारों ओर एक एकीकृत सुरक्षा ढांचा तैयार करेंगे। इस ढांचे से न केवल सीमाओं की सुरक्षा सुदृढ़ होगी, बल्कि बांग्लादेश और उससे सटे क्षेत्रों में संदिग्ध गतिविधियों पर भी तेजी से नियंत्रण रखा जा सकेगा।

राफेल, ब्रह्मोस और S-400 से पूर्वी सीमा की ताकत

पूर्व में भारत ने इस क्षेत्र में राफेल लड़ाकू विमान, ब्रह्मोस सुपरसोनिक मिसाइल और S-400 एयर डिफेंस सिस्टम जैसी उच्च क्षमता वाली तैनाती कर रखी है। इन नए बेसों के जुड़ने के बाद पूर्वी कमान की सामरिक शक्ति और बढ़ जाएगी। यह तैनाती न केवल भौगोलिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है, बल्कि तकनीकी और रणनीतिक दृष्टि से भी इसे पूर्वी थिएटर में सबसे मजबूत सुरक्षा ढांचा बनाने वाला कदम माना जा रहा है।

क्षेत्रीय सुरक्षा और स्पष्ट संदेश

सैन्य विशेषज्ञों के अनुसार, यह कदम किसी भी पड़ोसी देश के प्रति आक्रामक रुख नहीं है, बल्कि भारत की क्षेत्रीय अखंडता और रणनीतिक स्थिरता सुनिश्चित करने के उद्देश्य से उठाया गया है। पूर्वी सीमा पर बढ़ती चुनौतियों और बदलते सुरक्षा परिदृश्य को ध्यान में रखते हुए यह स्पष्ट संदेश दिया गया है कि सिलीगुड़ी कॉरिडोर अब भारत की सबसे मजबूत और बहु-स्तरीय सुरक्षा लाइनों में से एक बन चुका है। नए बेसों और आधुनिक हथियार तैनाती से भारत न केवल संभावित खतरों के प्रति तैयार है, बल्कि पूर्वोत्तर क्षेत्र की सुरक्षा सुनिश्चित करने में भी सक्षम होगा। इस रणनीतिक निर्णय से यह भी स्पष्ट हो गया है कि भारत अपनी सुरक्षा और रणनीतिक हितों के प्रति संवेदनशील रहते हुए आवश्यक कदम उठाने में सक्षम है। पूर्वी सीमा पर यह बहु-स्तरीय सुरक्षा कवच न केवल आज की चुनौती का सामना करेगा, बल्कि आने वाले वर्षों में क्षेत्रीय स्थिरता और भारत की सामरिक शक्ति को और अधिक मजबूत करेगा।

अंतरराष्ट्रीय सीमा पर बीएसएफ ने बढ़ाई चौकसी: संवेदनशील इलाकों में विशेष गश्ती अभियान, ड्रोन और घुसपैठ पर पैनी नजर

(जीएनएस)। जम्मू/कश्मीर। पाकिस्तान की ओर से बढ़ती हलचल और हालिया घटनाओं को देखते हुए भारत ने अपनी अंतरराष्ट्रीय सीमा पर सुरक्षा और अधिक मजबूत कर दी है। सीमा सुरक्षा बल (बीएसएफ) ने शनिवार को संवेदनशील इलाकों में व्यापक गश्ती अभियान चलाया, जिसमें बीएसएफ जवानों के साथ स्थानीय पुलिस के वरिष्ठ अधिकारी भी शामिल रहे। अधिकारियों ने सीमा के विभिन्न संवेदनशील बिंदुओं का निरीक्षण कर तैनाती की स्थिति का जायजा लिया और सुनिश्चित किया कि किसी भी प्रकार की नापाक गतिविधि को समय रहते रोका जा सके। बीएसएफ ने सीमा पार नालों, पुलिया, चराई के स्थानों और नहरों पर अतिरिक्त जवान तैनात किए हैं। जवानों का कहना है कि वे 24 घंटे चौकसी में लगे हुए हैं और किसी भी संदिग्ध हरकत पर तुरंत प्रतिक्रिया देने के लिए तैयार हैं। इस दौरान आधुनिक निगरानी उपकरणों का भी इस्तेमाल किया जा रहा है, जिससे हर गतिविधि पर पैनी नजर रखी जा सके। हाल के समय में ड्रोन के जरिए हथियार और मादक पदार्थ भेजने की बढ़ती कोशिशों के मद्देनजर सीमा पर ड्रोन मूवमेंट पर विशेष सतर्कता बरती जा रही है। रात में निगरानी के लिए

अतिरिक्त लाइट्स, इन्फ्रारेड सिस्टम और अत्याधुनिक उपकरण तैनात किए गए हैं, ताकि किसी भी तरह की घुसपैठ या हथियार की तस्करी की कोशिश को तुरंत पकड़ा जा सके।

गश्ती अभियान में महिला जवानों की भागीदारी भी बढ़ी है। उन्होंने कहा कि वे देशवासियों की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए पूरी निष्ठा और तत्परता के साथ तैनात हैं। सीमा पर किसी भी उकसावे या असामाजिक गतिविधि का जवाब उसी कठोरता से दिया जाता है, जैसा परिस्थिति की मांग होती है। सूत्रों के अनुसार, सर्दियों के बढ़ने के साथ पाकिस्तान की ओर बने लांचिंग पैड पर आतंकियों की संख्या बढ़ाई जा रही है, जिनका उद्देश्य सीमा पार कर घुसपैठ करना है। इस स्थिति को देखते हुए बीएसएफ और भारतीय सेना ने अपनी निगरानी और मूवमेंट में तेजी लाई है। सीमा सुरक्षा बल ने साफ किया कि हर संदिग्ध हलचल पर नजर रखी जा रही है और किसी भी घुसपैठ की कोशिश को नाकाम करने के लिए सभी यूनिट हाई अलर्ट पर हैं।

यह गश्ती अभियान और सुरक्षा बढ़ाने के कदम यह संदेश देते हैं कि भारत अपनी सीमा की अखंडता और नागरिकों की सुरक्षा के लिए हर प्रकार की तैयारी कर रहा है। बीएसएफ का कहना है कि सीमा पर चौकसी और निगरानी लगातार जारी रहेगी और किसी भी असामाजिक गतिविधि को रोकने के लिए तैनात सभी जवान सतर्क और तैयार हैं।

दिल्ली पुलिस ने भट्टी टेरर मॉड्यूल का भंडाफोड़ किया: लॉरेंस बिश्नोई के भाई पर था बड़ा खतरा

(जीएनएस)। नई दिल्ली। दिल्ली पुलिस स्पेशल सेल ने पाकिस्तान स्थित खुफिया एजेंसी ISI के इशारे पर काम कर रहे एक बड़े टेरर मॉड्यूल का पर्दाफाश करते हुए तीन आतंकियों को गिरफ्तार किया है। यह मॉड्यूल भारत में टारगेट किलिंग और ग्रेनेड हमलों की साजिश रच रहा था, और इसके निर्देश सीधे पाकिस्तान में बैठे गैंगस्टर शहजाद भट्टी द्वारा दिए जा रहे थे। जांच में यह भी सामने आया कि मॉड्यूल का सबसे बड़ा निशाना लॉरेंस बिश्नोई का भाई अनमोल बिश्नोई था, जिसके जीवन पर वास्तविक खतरे के संकेत मिले हैं।

तीन गिरफ्तार आतंकियों में हरगुनप्रीत सिंह (पंजाब), विकास प्रजापति (मध्य प्रदेश) और आरिफ (उत्तर प्रदेश) शामिल हैं। एडिशनल CP प्रमोद कुमार कुशवाहा ने बताया कि ये आरोपी सीधे शहजाद भट्टी से संपर्क में थे और 25 नवंबर को पंजाब के गुरदासपुर सिटी पुलिस स्टेशन के बाहर हुए ग्रेनेड हमले में शामिल थे। मोबाइल चैट्स, वॉयस नोट्स और लोकेशन डेटा से यह पुष्टि हो चुकी है कि ये आतंकवादी पंजाब के कई इलाकों की रेकी भी कर चुके थे। जांच में यह बात स्पष्ट हुई कि यह गिरोह केवल

गैंगस्टर नेटवर्क नहीं, बल्कि पूरी तरह से पेशेवर टेरर सेल की तरह कार्य करता था। भट्टी सोशल मीडिया के जरिए युवाओं को जोड़कर भारत में टारगेट किलिंग और ग्रेनेड हमलों की योजना बनवाता था। स्पेशल सेल के अनुसार, गिरफ्तार आतंकियों के लिंक पंजाब से भी जुड़े हुए हैं, और जल्द ही पंजाब पुलिस को उनके बारे में जानकारी दी जाएगी। गिरफ्तार विकास प्रजापति के पास से एक पिस्टल और 10 जिंदा कारतूस भी बरामद हुए हैं। पुलिस का कहना है कि यह कार्रवाई भट्टी मॉड्यूल पर एक बड़ा झटका है और आगे सुरक्षा एजेंसियों को अब यह भी चिंता है कि लॉरेंस बिश्नोई के भाई अनमोल पर भट्टी से वास्तविक खतरा है। 27 अक्टूबर को अनमोल ने कोर्ट में अर्जी देकर कहा था कि उसे शहजाद भट्टी से गंभीर खतरा है। 28 नवंबर को NIA ने अदालत में इसकी पुष्टि की और कहा कि उनके पास ऐसे इनपुट मौजूद हैं जो खतरे की पुष्टि करते हैं। अनमोल ने कोर्ट से बुलेटप्रूफ गाड़ी और जैकेट, परिवार और वकीलों की सुरक्षा सुनिश्चित करने की मांग भी की है।शहजाद भट्टी के पुराने हमले और सोशल मीडिया पर आए धमकी भरे वीडियो उनके खतरनाक इरादों की पुष्टि करते हैं। मार्च 2025 में जालंधर में एक यूट्यूबर के घर हुए ग्रेनेड हमले की जिम्मेदारी भट्टी ने ली थी। दिल्ली पुलिस की यह कार्रवाई भट्टी नेटवर्क के लिए एक बड़ा झटका मानी जा रही है और सुरक्षा एजेंसियां अनमोल बिश्नोई के खतरे को वास्तविक टेरर इनपुट मानकर लगातार जांच कर रही हैं। यह कार्रवाई भारत में टेरर नेटवर्क और उनके विदेश स्थित समर्थकों के खिलाफ सक्रिय निगरानी और त्वरित प्रतिक्रिया की मिसाल भी है। दिल्ली पुलिस के अनुसार, आगामी दिनों में और गिरफ्तारी की संभावना है, जिससे भट्टी मॉड्यूल का संचालन बाधित होगा और संभावित हमलों की योजना विफल होगी।

बोधगया एयरपोर्ट पर एक्सपायर वीज़ा लेकर प्रवेश की कोशिश: सात विदेशी महिलाएं रोकी गईं, एयरलाइंस पर जुर्माने की चेतावनी

(जीएनएस)। पटना/गया। अंतरराष्ट्रीय पर्यटन सीजन के बीच गया जी एयरपोर्ट पर सुरक्षा और वीज़ा जांच को और सख्त कर दिया गया है। रविवार को एयरपोर्ट पर मलेशिया, सिंगापुर और थाईलैंड से आई कुल सात विदेशी महिलाओं को एक्सपायर वीज़ा के साथ भारत में प्रवेश करने की कोशिश करते हुए रोका गया। सभी महिलाएं थाई एयर एशिया और थाई एयरवेज की उड़ानों से बोधगया पहुंची थीं। एयरपोर्ट प्रभारी निदेशक अवधेश कुमार ने बताया कि इमिग्रेशन जांच के दौरान वीज़ा एक्सपायर पाए जाने पर इन यात्रियों को एयरपोर्ट परिसर से बाहर जाने की अनुमति नहीं दी गई। प्रारंभिक अनुमान है कि इन्हें वापस अपने मूल देश भेजा जा सकता है या आवश्यक प्रक्रिया के तहत वैकल्पिक कार्रवाई की जाएगी।

गया एयरपोर्ट पर वीज़ा से जुड़े मामलों में पिछले कुछ दिनों में वृद्धि देखी गई है। केवल पिछले तीन दिनों में ही 19 विदेशी यात्रियों को या तो बिना वीज़ा या एक्सपायर वीज़ा के कारण रोका गया है। गुरुवार को कंबोडिया से आए एक चार्टर्ड विमान के 12 यात्रियों को रोका गया था, जिनमें सात महिलाएं और पांच बौद्ध भिक्षु शामिल थे। उनके पास वैध वीज़ा न होने पर एयरपोर्ट प्रशासन ने उन्हें टेम्परेरी लिविंग परमिट (TLP) जारी किया, जिसके तहत उन्हें सात दिनों के भीतर कंबोडिया लौटना होगा।

एयरपोर्ट प्रशासन ने चेतावनी दी है कि एक्सपायर वीज़ा लेकर आने वाले यात्रियों से न्यूनतम दो लाख रुपये तक का जुर्माना वसूला जा सकता है। यह जुर्माना संबंधित एयरलाइन के माध्यम से ही लिया जाएगा।

बोधगया में अंतरराष्ट्रीय पर्यटकों की बढ़ती संख्या और पर्यटन सीजन को देखते हुए एयरपोर्ट पर इमिग्रेशन जांच और सुरक्षा उपायों को और अधिक कठोर किया गया है। लगातार सामने आ रहे मामलों के बाद सभी अंतरराष्ट्रीय उड़ानों की वीज़ा स्क्रीनिंग को मजबूत किया गया है। अधिकारियों का कहना है कि एयरपोर्ट पर चौकसी और निगरानी लगातार जारी रहेगी ताकि किसी भी तरह की वीज़ा अनियमितता और सुरक्षा खामियों को समय रहते रोका जा सके।

पाकिस्तानी आका शहजाद भट्टी के इशारे पर भारत में रची जा रही आतंकवादी साजिश का पर्दाफाश: दिल्ली स्पेशल सेल ने तीन युवकों को किया गिरफ्तार

(जीएनएस)। नई दिल्ली। राजधानी पुलिस की स्पेशल सेल ने आतंकवाद के खिलाफ बड़ी कार्रवाई करते हुए पाकिस्तान-प्रायोजित एक अंतरराष्ट्रीय मॉड्यूल का भंडाफोड़ किया है। इस कार्रवाई में तीन युवकों को गिरफ्तार किया गया है, जो पाकिस्तान में बैठे शहजाद भट्टी नामक हैंडलर के निर्देश पर भारत में हमलों की योजना बना रहे थे। यह सफलता सुरक्षा एजेंसियों के लिए बड़ी उपलब्धि मानी जा रही है, क्योंकि इससे कई संभावित आतंकी घटनाओं को समय रहते रोका जा सका। एसीपी स्पेशल सेल प्रमोद कुमार कुशवाहा के अनुसार यह मॉड्यूल पाकिस्तान की खुफिया एजेंसी के संरक्षण में संचालित हो रहा था। शहजाद भट्टी सोशल मीडिया के जरिए भारत के युवाओं को अपने जाल में फंसाता और उन्हें हमले, फंडिंग और लॉजिस्टिक्स के निर्देश देता था। जांच में पता चला कि मॉड्यूल के सदस्य पाकिस्तान से लगातार संपर्क में थे और भारत में संवेदनशील स्थानों पर हमले की योजना बना रहे थे।

गिरफ्तार किए गए युवकों की पहचान हरगुनप्रीत सिंह (फिरोजपुर, पंजाब), विकास प्रजापति (दतिया, मध्य प्रदेश) और आसिफ उर्फ आरिश (बिजनौर, उत्तर प्रदेश) के रूप में हुई है। इनके पास से एक सेमी-ऑटोमेटिक पिस्टल, 10 जिंदा कारतूस और कई मोबाइल फोन बरामद हुए हैं, जिनमें शहजाद भट्टी के साथ हुई बातचीत, टारगेट की रेकी वीडियो और चैट रिकॉर्ड मौजूद थे।

जांच में यह भी सामने आया कि 25 नवंबर को गुरदासपुर सिटी पुलिस स्टेशन के बाहर हुआ ग्रेनेड हमला इन्हीं युवकों द्वारा अंजाम दिया गया था। शहजाद भट्टी ने वीडियो कॉल के जरिए उन्हें ग्रेनेड फेंकने का तरीका सिखाया था, जबकि इलाके की रेकी और वीडियोग्राफी पहले ही की जा चुकी थी।

स्पेशल सेल पिछले कई महीनों से शहजाद भट्टी की गतिविधियों पर नजर रख रही थी। लगातार 48 घंटे की निगरानी के बाद विकास प्रजापति को मध्य प्रदेश से गिरफ्तार किया गया। पूछताछ के बाद हरगुनप्रीत और आसिफ तक पुलिस पहुंची। जांच में यह खुलासा हुआ कि विकास प्रजापति हथियार तस्करी में शामिल था और गुरदासपुर में रेकी कर रहा था, हरगुनप्रीत सीधे ग्रेनेड हमले में शामिल था और आसिफ अगला ग्रेनेड अटैक करने के लिए तैयार बैठा था, बस शहजाद भट्टी के निर्देशों का इंतजार कर रहा था।

पुलिस के अनुसार इस मॉड्यूल के अन्य लिंक भी सामने आए हैं, जिन्हें पंजाब पुलिस के साथ साझा किया जा रहा है। यह गिरफ्तारी पाकिस्तान-प्रायोजित आतंकवादी नेटवर्क पर करारा प्रहार मानी जा रही है और इससे भारत में कई संभावित हमले टल गए। सुरक्षा एजेंसियों का कहना है कि इस कार्रवाई से आतंकवादियों की योजना बाधित हुई है और देश की सुरक्षा सुनिश्चित करने में यह एक निर्णायक कदम साबित हुआ है।

नवसर्जन संस्कृति
हिन्दी

JioTV
CHENNAL NO.
2063

Jio Air Fiber
Jio Tv +
Jio Fiber
Daily Hunt
ebaba Tv
Dish Plus
DTH live OTT
Rock TV
Airtel
Amezone Fire
Rocu Tv-US.UK

देश-दुनिया के नवीनतम समाचार
प्राप्त करने के लिए आज ही
नवसर्जन संस्कृति हिंदी चेनल देखिये

संपादकीय

शारीरिक बदलाव देखकर छात्रों का

अक्सर देखा जाता है कि परीक्षाओं के दौरान छात्र तनावग्रस्त हो जाते हैं। एक भय हावी हो जाता है, जिससे वे परीक्षाओं में बेहतर प्रदर्शन नहीं कर पाते। कुछ छात्र तो अक्सर खूब पढ़कर जाने के बावजूद परीक्षा के दौरान तनाव के चलते सब कुछ भूल जाते हैं। दरअसल, हमारा शैक्षिक परिवेश हाल के दिनों में बेहद प्रतिस्पर्धी हो चला है। मासूम बच्चों के सामने गला-काट स्पर्धा होती है। विडंबना यह है कि दुनिया में सबसे बड़ी आबादी वाले देश में रोजगार के अवसर जनसंख्या के अनुपात में नहीं बढ़े हैं, जिससे स्पर्धा और कठिन हो गई है। उच्च शिक्षण संस्थान में प्रवेश हो या फिर नौकरी के अवसर, वे प्रतियोगियों के मुकाबले बहुत कम होते हैं, जिसकी परिणति छात्रों में बढ़ते तनाव और कालांतर में उसके अवसाद में बदलने के रूप में होती है। यही वजह है कि स्कूल-कालेजों के परीक्षा परिणाम आने पर देश में आत्महत्या करने वाले छात्रों की सुर्खियां अखबारों में बनती हैं। सुखद है कि अब आईआईटी मद्रास के शोधकर्ताओं ने ऐसे शारीरिक संकेतकों का पता लगाया है, जिससे पता चल सकेगा कि किन छात्रों में परीक्षा के दौरान चिंता बढ़ने का जोखिम अधिक है। इस खोज को शिक्षा प्रणाली में तनाव प्रबंधन व प्रदर्शन सुधारने हेतु बड़े बदलाव की दिशा में महत्वपूर्ण कदम माना जा रहा है। हाल ही में यह शोध 'बिहेवियरल ब्रेन रिसर्च' में प्रकाशित हुआ है। इससे छात्रों के लिए व्यक्तिगत तनाव प्रबंधन योजना भी तैयार हो सकेगी। यह वैज्ञानिक सत्य है कि किसी भी व्यक्ति में मस्तिष्क व हृदय के बीच संचार-तंत्र टूटने से तनाव पैदा होता है। ऐसे में आईआईटी मद्रास ने परीक्षा के तनाव को पहचानने के जो जैविक संकेत पहचाने हैं, वे आने वाले समय में परीक्षा तनाव प्रबंधन में मददगार साबित हो सकते हैं। कोशिश है कि अब एआई की मदद से छात्रों के तनाव जोखिम की पहचान की जा सके। दरअसल, नये शोध की मुख्य बातें दो शारीरिक संकेतों को जोड़ने में निहित हैं। फ्रंटल अल्फा एसिमिट्री यानी एफएए, जो कि भावनात्मक नियमन का मस्तिष्क आधारित संकेतक है। दूसरा हार्ट रेट वैरिएबिलिटी, जो हृदय के अनुकूलन नियंत्रण को मापता है। ये संकेत चिंताग्रस्त छात्रों की पहचान करने में मदद करते हैं। शोधार्थियों ने पाया कि जिन छात्रों में एफएए पैटर्न नकारात्मक होता है, उनमें तनाव से हृदय के संतुलन तंत्र की क्षमता कमजोर पड़ जाती है। दरअसल, परीक्षा को लेकर जो अधिक फिक्र है, वो हृदय की प्रतिक्रिया को भी बाधित करती है। परिणामस्वरूप वे अधिक तनाव में आ जाते हैं। शोध में इन तथ्यों को भी समझने का प्रयास हुआ कि कुछ छात्र परीक्षा के तनाव के बावजूद बेहतर प्रदर्शन करने में कैसे सफल हो जाते हैं। वहीं कुछ छात्र चिंताग्रस्त होकर परीक्षा में सफल नहीं हो पाते हैं। दरअसल, साल भर नियमित पढ़ाई न करने और परीक्षा सामने आने पर वे घबराहट में तनावग्रस्त हो जाते हैं। एनसीआरटी का एक अध्ययन बताता है कि देश में 81 फीसदी छात्र परीक्षा को लेकर तनाव में रहते हैं। उम्मीद है नया शोध का निष्कर्ष समस्या का कारगर समाधान करेगा।

हम समझें इस दुर्लभ मानव जीवन का महत्व

> "जीवन का मूल्य बाहरी उपलब्धियों, धन-दौलत व पद प्रतिष्ठा आदि में कभी नहीं रहा है, ये सेवा के लिए जीवन के सहज अवलम्बन हो सकते हैं, जीवन उद्देश्य नहीं।

मनुष्य जीवन कितना बेशकीमती है, इसका सामान्यतः अहसास नहीं हो पाता, क्योंकि यदि अहसास होता तो यह बहुमूल्य उपहार यूं ही व्यर्थ नष्ट नहीं होता। दुर्व्यसन से लेकर नशा एवं आत्मघाती कृत्यों के साथ जीवन लीला को अपने हाथों से नष्ट करते समाचार नित्य सुर्खियों में होते हैं। इसके साथ भ्रष्टाचार से लेकर आतंक और आपराधिक गतिविधियों के समाचारों के साथ देवत्व एवं ईश्वरत्व की संभावनाओं से युक्त मनुष्य जीवन को पतन-पराभव के गर्त में गिरते देखा जा सकता है। बिना सार्थकता की अनुभूति के जीवन की ऐसी दुर्गति को एक त्रासद दुर्भाग्य ही माना जाएगा।

जबकि मनुष्य जीवन में सुख-शांति व सृजन के अभूतपूर्व रोमांच की अनंत संभावनाएं हैं। हर इंसान इनकी कल्पना भी करता है, नाना रूपों में पाने की चेष्टा करता है, लेकिन जीवन की सही समझ के अभाव में वह दिशा भटक जाता है और ये संभावनाएं अधूरी ही रह जाती हैं। जिस संतुष्टि, स्वतंत्रता व आनंद की कल्पना मनुष्य बाहरी सम्पदा, मोह-ममता और सत्ता सुख में करता है, वे भी अंततः मृगमारिचिका बनकर पहुंच से दूर हो जाती हैं और जीवन के अंतिम पलों में हाथ कुछ नहीं लगता। बिना किसी सार्थक निष्कर्ष के मानव जीवन के इस अवसान को एक दुर्घटना ही कहा जाएगा।

भारतीय परंपरा में मनुष्य जीवन को सृष्टि का सर्वश्रेष्ठ उपहार कहा गया है और इसे दुर्लभ माना गया है। देवता भी मनुष्य शरीर को प्राप्त करने के लिए तरसते हैं, क्योंकि इसी में वे संभावनाएं मौजूद हैं, जो आत्मतत्व को जाग्रत करते हुए सकल मानवीय सीमाओं एवं दुख को तिरोहित कर सके और जीव से शिव, नर से नारायण की यात्रा सम्पन्न करते हुए अंततः परमात्मा के प्रतिरूप आत्म-स्वरूप को प्राप्त कर सके। भारतीय परंपरा में जीवन का मूल्य बाहरी

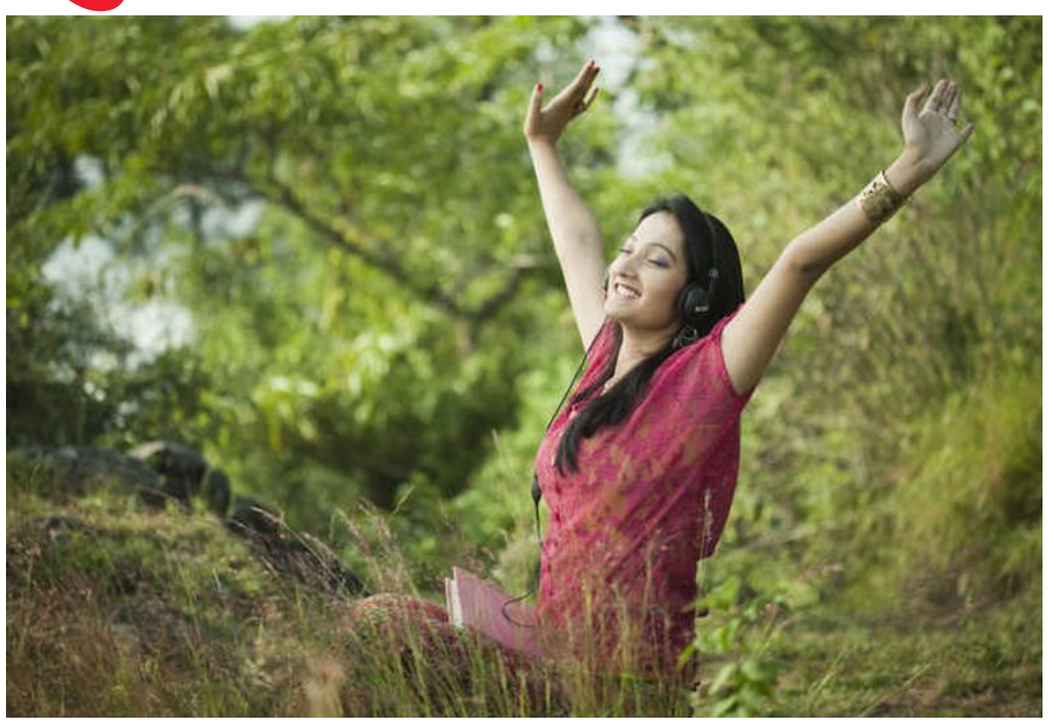

उपलब्धियों, धन-दौलत व पद-प्रतिष्ठा आदि में कभी नहीं रहा है, ये सेवा के लिए जीवन के सहज अवलंबन हो सकते हैं, जीवन उद्देश्य नहीं। क्योंकि यदि इनके रहते भी व्यक्ति अशांत, असंतुष्ट, परेशान और जीवन के आनंद से वंचित है, तो यह घाटे का सौदा माना जाएगा। आश्चर्य नहीं कि बुद्ध भगवान से लेकर महावीर, नानक, कबीर और महर्षि रमण जैसे ऋषितुल्य शिखर पुरुष शांति, आनंद व धन्यता की खोज में किसी बाहरी सुख, सुविधा व सत्ता के मोहताज नहीं रहे, बल्कि इन सबका त्याग करते हुए जीवन के परमलाभ को प्राप्त हुए और आज भी प्रेरणा के प्रकाशपुंज बनकर जीवन जीने का कालजयी संदेश दे रहे हैं।

इन सबका एक ही संदेश रहा कि जीवन की असली संपदा इंसान के अंदर कस्तुरी मृग की तरह छिपी पड़ी है। भ्रम की मृगमारिचिका के कारण वह इसे बाहर ढूंढ़ता फिर रहा है। वासना, तृष्णा और अहंकार के नागपाश में बंधकर वह जीवन की सुख-संतुष्टि की तलाश बाहर खोजने के लिए प्रेरित हो रहा है, लेकिन उसका हर प्रयास चूक जाता है और अंततः जब समय आता है तो काफी देर हो चुकी होती है। यदि समय रहते इसकी समझ और अंतर्दृष्टि विकसित की होती, तो हाथ में कुछ सार्थक लगता, जिसकी वह चिरकाल से प्रतीक्षा कर रहा था।

लकड़हारे की कहानी प्रख्यात है कि उसे राजा द्वारा उसके उपकार के लिए उपहार के रूप में एक चंदन का जंगल भेंट में मिलता है। राजा को आशा थी कि अब उसकी गरीबी दूर हो जाएगी और वह एक खुशहाल जीवन जीएगा। लकड़हारा इस वन से पेड़ काटकर, इसका कोयला बनाता और पास के शहर में जाकर बेच आता था। यह सिलसिला कई माह और वर्षों तक चलता रहा, और वह अपनी झोपड़ी में इससे मिलने वाली धनराशि से गुजर-बसर करता रहा। जब एक दिन राजा जंगल में शिकार करते हुए वहां से गुजरता है, तो आश्चर्यचकित होता है कि लकड़हारा उसी झोपड़ी में रह रहा है, जबकि उसे उम्मीद थी कि वह अब तक सम्पन्न हो गया होगा। अब वहां कुछ पेड़ बचे थे। राजा ने पूरा हाल-चाल पूछा तो माथा ठोककर रह गया और लकड़हारे को समझाया कि यह चंदन का पेड़ है, जिसका एक पेड़ भी इसकी दरिद्रता को दूर करने के लिए पर्याप्त था। लकड़हारा अपनी मूर्खता पर पछताता है और बचे वृक्षों का सदुपयोग करते हुए शेष जीवन को सम्पन्नता एवं धन्यता के साथ गुजारता है।

यही कहानी हर इंसान की है, जिसे ईश्वर ने वे सारी क्षमताएं, विभूतियां बीज रूप में प्रदान की हैं —एक स्वस्थ-सबल काया, कम्प्यूटर से भी तेज चलने वाला मस्तिष्क, वायु से भी तीव्र मन, किसी भी समस्या को भेदने में सक्षम बुद्धि, प्रेरणा के अजस्र स्रोत भावनाएं, अस्तित्व के हर रहस्य को भेदने में सक्षम अंतरप्रज्ञा, किसी भी कल्पना को मूर्त करने में सक्षम इच्छा शक्ति। और साथ में समय के रूप में सबको चौबीस घंटे, जिनका सदुपयोग करते हुए वह अपनी मनचाही सृष्टि का सृजन कर सकता है।

देर इन क्षमताओं के प्रति जागने भर की है, नित्य अपने आंतरिक मन में झांकने की है, आत्मनिरीक्षण करते हुए इसमें बाधक आंतरिक एवं बाह्य तत्वों को पहचान कर दूर करने भर की है। नित्य स्वाध्याय, सत्संग एवं आत्मचिंतन-मनन के प्रकाश में प्राप्त अंतर्दृष्टि के आधार पर वह इसे सहजता से कर सकता है और जीवन शैली में आवश्यक परिवर्तन करते हुए, व्यक्तित्व में अभीष्ट पात्रता के विकास के साथ जीवन को नए सिरे से परिभाषित कर सकता है और इस दुर्लभ मानव जीवन को सफल और सार्थक बना सकता है।

प्रेरणा

समर्पण और आस्था की अद्भुत शिक्षा: मेढक की मौन भक्ति जिसने भगवान राम का हृदय छू लिया

एक समय की बात है, जब प्रभु राम और उनके प्रिय भाई लक्ष्मण अपने दिव्य जीवन की दिनचर्या के अनुसार स्नान के लिए एक शांत सरोवर की ओर गए। यह सरोवर केवल जल का भंडार नहीं था, बल्कि वह स्थान था जहाँ प्रकृति, जीव-जंतु और मनुष्य, सभी ईश्वर की उपस्थिति और लीला का अनुभव करते। प्रभु राम और लक्ष्मण जैसे महान पुरुष जब सरोवर में उतरते हैं, तो उनका प्रत्येक क्रिया-कलाप भी दिव्यता और करुणा से भरा होता है।

स्नान के लिए उतरते समय दोनों भाइयों ने अपने-अपने धनुष तट पर गाड़ दिए, यह सोचकर कि स्नान के बाद उन्हें वही पुनः लेकर जाना है। स्नान कर लौटते समय उन्होंने देखा कि धनुष की नोक पर कुछ लालिमा सी लगी हुई है। अपनी जिज्ञासा और करुणा के भाव से उन्होंने मिट्टी हटा कर देखा, तो पाया कि वहाँ एक छोटा-सा मेढक घायल अवस्था में पड़ा है।

भगवान राम की करुणा ने उन्हें तुरंत मेढक के पास खींच लिया। उन्होंने मेढक

से पूछा—"हे छोटे जीव! जब कोई सांप तुम्हें पकड़ता है, तब तुम जोर-जोर से 'राम-राम' पुकारते हो, पर आज जब धनुष तुम्हें चोटिल कर गया, तब चुप क्यों रहे? अपने प्राणों की रक्षा के लिए पुकार क्यों नहीं किया?"

मेढक, अपने छोटे शरीर और कोमल हृदय के साथ, विनम्रता और सच्ची भक्ति की भाषा में उत्तर देता है—"प्रभु! जब सांप मुझे पकड़ता है, तब मैं 'राम-राम' पुकारता हूं, क्योंकि मुझे विश्वास है कि आप मेरी रक्षा करेंगे। पर आज जब स्वयं भगवान राम मेरे सामने हैं, और उसी के हाथ से धनुष गड़ा है, तो मैं किसे पुकारूं? किससे अपनी रक्षा की आशा करूं? इसलिए मैंने इसे आपका ही सौभाग्य, आपकी ही लीला मानकर मौन रहना उचित समझा।"

यह उत्तर किसी सामान्य जीव का नहीं था, यह समर्पण का उच्चतम स्वर था। मेढक ने अपने छोटे-से जीवन में भी यह सिखा दिया कि सच्चा भक्त किसी भी स्थिति में अपने प्रभु पर विश्वास रखता है। वह न केवल सुख में बल्कि दुख में भी धैर्यपूर्वक ईश्वर की लीला और कृपा को स्वीकार करता है।

भगवान राम स्वयं भावविभोर हो गए। इस घटना से एक गहन संदेश मिलता है कि भक्ति केवल शब्दों या क्रियाओं में नहीं है, बल्कि हृदय की निष्ठा और समर्पण में है। सच्चा भक्त अपने जीवन के हर क्षण को प्रभु की इच्छा, प्रभु की लीला और प्रभु के उपहार के रूप में स्वीकार करता है। सुख और दुख, लाभ और हानि, सभी उसके लिए एक समान होते हैं, क्योंकि हर अनुभव में वह प्रभु की उपस्थिती देखता है।

यह कहानी हमें यह भी सिखाती है कि समर्पण और आस्था का मार्ग कभी आसान नहीं होता, पर यह मार्ग मनुष्य को भीतर से मजबूत बनाता है। यही वह शांति है जो बाहरी परिस्थितियों से प्रभावित नहीं होती। यही वह शक्ति है जो हर जीव को अपने जीवन में ईश्वर के प्रति पूर्ण विश्वास और अनन्य भक्ति का अनुभव कराती है।

इस तरह, एक छोटा सा मेढक, जो शायद हम सभी की तरह नन्हा और असहाय था, उसने अपने मौन और समर्पित हृदय से यह संदेश दिया कि सच्चा भक्ति वही है जो जीवन के हर क्षण में ईश्वर की लीला और कृपा को अपनाकर उसे पूर्ण श्रद्धा और विश्वास के साथ स्वीकार करे।

अभियान

शिव-पार्वती का दिव्य विवाह: महाशिवरात्रि पर व्रत पाठ से दांपत्य जीवन में आए

महाशिवरात्रि का पर्व केवल एक दिन का उत्सव नहीं है, बल्कि यह भगवान शिव और माता पार्वती की दिव्य लीला और प्रेम का प्रतीक है। धार्मिक मान्यता है कि इसी दिन भगवान शिव और माता पार्वती का विवाह संपन्न हुआ था। इस पवित्र दिन उनकी विधिविधान से पूजा-अर्चना करने, कथा का पाठ करने और व्रत करने से दांपत्य जीवन में सुख, शांति और समृद्धि आती है। इस कथा में हम आपको शिव-पार्वती के विवाह की संपूर्ण घटना विस्तारपूर्वक बता रहे हैं, ताकि महाशिवरात्रि के व्रत का पाठ करने वाले भक्तों को आशीर्वाद प्राप्त हो।

कथा के अनुसार, ब्रह्माजी ने नारद से कहा कि पर्वतराज हिमाचल अपनी पुत्री मेना के साथ कन्यादान का आयोजन कर रहे थे। हिमाचल अपने उत्तम वस्त्राभूषणों और आभूषणों से विभूषित पुत्री मेना को सोने के कलश सहित दाहिनी ओर बैठाकर, ब्राह्मणों की उपस्थिती में उसका विवाह विधिपूर्वक संपन्न कराने जा रहे थे। पुरोहितों के साथ सभी विद्वान मंत्रोच्चारण करते हुए कन्यादान के संकल्प वाक्य बोले और इस शुभ अवसर को यथोचित विधि से संपन्न किया गया।

हिमालय ने ब्राह्मणों से कहा कि अब तिथि आदि का कीर्तन करें और विवाह के सभी नियमों का पालन करें। इस पर

भगवान शिव, जिन्होंने स्वयं ब्रह्मा, विष्णु और अन्य देवताओं को अज्ञात रखते हुए अपने निराकार स्वरूप में अस्तित्व धारण किया था, शोचनीय अवस्था में खड़े हो गए। नारद मुनि हंसते हुए बोले कि शंभू को किसी गोत्र या कुल से बांधना संभव नहीं, क्योंकि वे स्वयं सर्वशक्तिमान, निर्गुण, निराकार और परब्रह्म हैं। उनकी महानता, उनके अद्भुत स्वरूप और उनकी लीला के कारण ही वे उत्तम भाव से ज्ञात और पूजनीय हैं।

नारद जी की उपदेशात्मक वाणी से हिमालय संतुष्ट हुए और उन्होंने गर्व से अपनी कन्या का हाथ भगवान शिव को सौंप दिया। मंत्रोच्चारण के साथ कन्यादान संपन्न हुआ और भगवान शिव ने विधिपूर्वक माता पार्वती के करकमल को अपने हाथों में लिया। इस अवसर पर सभी देवता, गंधर्व और अप्सराएं नृत्य करती हुई, मंगल गीत गा रही थीं। विष्णु, इन्द्र, ब्रह्मा और अन्य मुनियों सहित सभी ने हर्ष व्यक्त किया। हिमालय ने दहेज के रूप में अनेक मूल्यवान वस्तुएं, रत्न, घोड़े, हाथी, सुवर्ण रथ आदि भगवान शिव को भेंट किए।

इसके बाद ब्रह्माजी की अनुमति से भगवान शिव ने अग्नि की स्थापना करवाई और माता पार्वती को अपनी सामने बैठाकर ऋग्वेद, यजुर्वेद और सामवेद के मंत्रों द्वारा अग्नि में आहुति दी। इसके पश्चात पाणिग्रहण की विधि संपन्न हुई और नवदम्पति ने एक-दूसरे के प्रति अपनी भक्ति और प्रेम की भावना प्रकट की। भगवान शिव ने पार्वती को अपने वामभुज में बिठाया और उनके लिए मंगल आशीर्वाद दिया।

इस अवसर पर दिव्य नारी मंडल, जिसमें लक्ष्मी, सरस्वती, गंगा, अदिति, शची, तुलसी, अरुंधती और अन्य कन्याएं शामिल थीं, भगवान शिव और माता पार्वती के चरणों में आसीन हुईं। रति ने भगवान शिव से कामदेव को जीवित करने और उनके पूर्व में हुए दोषों को क्षमा करने की प्रार्थना की। भगवान शिव की करुणा से कामदेव पुनर्जीवित हुए और रति के साथ पुनः आनंद और प्रेम का आदान-प्रदान हुआ।

शिव-पार्वती का यह विवाह न केवल देवों और ऋषियों के लिए आनंद का कारण बना, बल्कि समस्त सृष्टि में सुख, मंगल और समृद्धि का संदेश फैलाया। उनके विवाह से प्राप्त आशीर्वाद से दांपत्य जीवन सुखमय होता है, वैवाहिक प्रेम में वृद्धि होती है और गृहस्थ जीवन में शांति, सौभाग्य और ऐश्वर्य आता है।

महाशिवरात्रि पर इस कथा का व्रत पाठ और पूजा करने से यह आशीर्वाद और अधिक प्रबल होता है। भक्तों के जीवन में कठिनाइयों का नाश होता है, वैवाहिक जीवन में प्रेम और विश्वास बढ़ता है और मनुष्य को आत्मिक शांति प्राप्त होती है। यह कथा हमें सिखाती है कि सच्चा प्रेम, समर्पण और श्रद्धा केवल देवों तक ही सीमित नहीं, बल्कि जीवन में सभी संबंधों और कर्तव्यों में भी दिव्यता लाती है।

बंगाल के इन मुस्लिमों को ढूंढ़ कर क्या करेंगे मोदी-शाह? प्लान जानकर ममता के उड़ जाएंगे होश!

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने बिहार चुनाव में एनडीए की प्रचंड जीत के बाद यह बात तो कह दी कि जहां मां गंगा जाएंगी वहां पर बीजेपी आएगी। यानी पश्चिम बंगाल के लिए प्लानिंग तैयार है। लेकिन क्या पश्चिम बंगाल में बीजेपी को जीत दर्ज कर पाना उतना ही आसान होगा जितना बिहार में था? 2025 में पहले दिल्ली और अब बिहार के चुनाव हुए, जिसमें बीजेपी ने शानदार जीत दर्ज की है। 2026 में चार बड़े राज्यों और केंद्र शासित प्रदेश में चुनावी रथ दौड़ेगा। जिन पांच राज्यों में अगले वर्ष चुनाव होने हैं, उनमें पश्चिम बंगाल, तमिलनाडु, केरल, असम और पुडुचेरी हैं। वहीं 2027 में पंजाब, यूपी समेत उत्तर भारत के कई राज्यों में विधानसभा चुनाव होंगे। एक तरह से देखा जाए तो भारत का राजनीतिक परिदृश्य 2025 से 2029 के बीच कई अहम चुनावी घटनाओं से भरा रहेगा। पश्चिम बंगाल में चुनाव मई के महीने में होंगे और बंगाल में बीजेपी के लिए रास्ते आसान नहीं होंगे। क्योंकि ना बिहार वाले मुद्दे होंगे ना बिहार वाला समीकरण होगा। बीजेपी को वहां पर अकेले ही पूरा दम लगाना होगा। वहां पर नीतीश कुमार, चिराग पासवान जैसे सहयोगी भी नहीं होंगे । पश्चिम बंगाल एक ऐसा राज्य है, जहां पर पिछले कई साल से बीजेपी जी-तोड़ मेहनत कर रही है। 2021 में कोविड के दौरान हुए चुनाव में भी बीजेपी ने ममता बनर्जी सरकार को सत्ता से हटाने के लिए बहुत कोशिश की, लेकिन कामयाब नहीं हो पाई। हालांकि पिछले चुनाव में बीजेपी का न केवल वोट शेयर अच्छा खासा बढ़ा बल्कि सीटों की संख्या भी 3 से बढ़कर 77 हो गई। 294 सदस्यों वाली पश्चिम बंगाल विधानसभा में तृणमूल कांग्रेस ने 213 सीटें जीतकर और अब 2026 के चुनाव में फिर एक बार रोचक मुकाबले की उम्मीद है।

पूरे केंद्रीय नेतृत्व को दम लगाना होगा और उसके लिए मुसलमानों को साधना होगा। जरूरी नहीं है कि मुस्लिम बीजेपी को वोट करें। लेकिन वहां पर भी बीजेपी को उन मुसलमानों तक पहुंच बनानी होगी जो टीएमसी को घाटा पहुंचा सके। या तो मुस्लिम बीजेपी को वोट कर दें या फिर सीपीएम-सीपीआई और कांग्रेस के साथ चले जाए। जिससे बीजेपी बिहार वाले सीमांचल की तरह वहां पर प्रदर्शन कर पाए। हार्ड कोर हिंदुत्व वाली पॉलिटिक्स जो है अगर वो बीजेपी ने बंगाल में की तो फिर उसके लिए हालात थोड़े चुनौतिपूर्ण हो सकते हैं। सबसे बड़ा सवाल ये कि 70 से 75% वाले हिंदू बहुल पश्चिम बंगाल में हिंदुत्व वाली हार कोर्ट पॉलिटिक्स क्यों नहीं चल सकती? तो इसके पीछे का कारण लगभग 30 प्रतिशत की मुस्लिम आबादी सीधे सीधे 50 सीटों पर टर्निंग फैक्टर हैं। 25 से 30 सीटों पर उनका प्रभाव ऐसा है कि वो वहां का माहौल बदल देते हैं।

2020 के विधानसभा चुनाव में अगर देखें और 204 के लोकसभा चुनाव में तो मुस्लिमों का साथ बीजेपी को नहीं मिला। 2026 के विधानसभा चुनाव में बीजेपी ऐसा नहीं होने देना चाहती है और मुस्लिमों तक पैठ बनाने की तैयारी कर ली गई है। बीजेपी का मानना है कि राष्ट्रवादी मुस्लिमों के खिलाफ वो नहीं है। वो उन मुस्लिमों के खिलाफ हैं जो देश को दहलाने की कोशिश करते हैं। जो कट्टरपंथ वाले विचारधारा वाले हैं। बीजेपी ऐसे मुस्लिमों के बीच पहुंच बना रही है जो टीएमसी के खिलाफ हैं। बहुत ज्यादा पिछड़े हैं। यानी सीधे से पसमांदा मुस्लिम। टीएमसी से नाराज मुस्लिम सीपीएम और कांग्रेस के पास अक्सर चले जाते हैं। उनको वोट कर देते हैं। लेकिन अब की बीजेपी उन्हें अपने साथ लाने की पूरी कोशिश कर रही है। बीजेपी का यह प्लान है कि अबकी सीपीआई या सीपीएम के पास टीएमसी से नाराज मुस्लिम वोटर ना जाएं।

यह तो पता ही है कि जो घुसपैठिए हैं जो जबरदस्ती जिनका वोटर आईडी आधार कार्ड बनवा दिया गया वो तो वोट नहीं करेंगे। हालांकि एसआईआर में उनका सफाया हो जाएगा। वो एक बड़ा फैक्टर होगा यहां पर। तो एसआईआर में सफाए के बाद जो इसी देश के मुस्लिम बचेंगे और जो टीएमसी से नाराज होंगे उनको खींचने की तैयारी बीजेपी आलाकमान ने कर ली है। अब ऐसे में पश्चिम बंगाल बीजेपी के अध्यक्ष का बयान आया है। उन्होंने दावा किया है कि पिछले तीन सालों में पश्चिम बंगाल में हुई राजनीतिक हिंसा में सबसे ज्यादा मौत मुसलमानों की हुई। मुसलमान ही मुसलमानों को मार रहे हैं। बीजेपी अब यह बता रही है मुस्लिमों को कि आपके दुश्मन हिंदू नहीं है। आपके दुश्मन मुसलमान हैं।

भ्रष्टाचार का मुद्दा भी दिल्ली चुनाव में बड़ा फैक्टर रहा। बंगाल में भी घर घर तक ममता सरकार के भ्रष्टाचार के किस्से बताने की योजना बीजेपी की तरफ से बनाई गई है। पश्चिम बंगाल में 2011 से ही ममता बनर्जी की सरकार है। तब टीएमसी ने 34 साल पुराने लेफ्ट के किले को ढहा कर पहली बार सत्ता हासिल की थी। 2014 के लोकसभा चुनाव में बीजेपी ने पश्चिम बंगाल की दो सीटें जीती और तब से ही वहां अपनी पकड़ मजबूत करने के लिए लगातार कोशिश कर रही है। 2016 के विधानसभा चुनाव में बीजेपी को तीन सीटें मिली लेकिन वोट शेयर 10 पर्सेंट रहा, जो बीजेपी का उत्साह बढ़ाने के लिए काफी था। हालांकि 2021 के विधानसभा चुनाव में ममता बनर्जी अपनी सत्ता बचाने में कामयाब रही। लेकिन बीजेपी 77 सीटें जीतकर मुख्य विपक्षी पार्टी बन गई। 2024 के लोकसभा चुनाव में बीजेपी 12 सीटें ही जीत पाई। लेकिन लेफ्ट और कांग्रेस की स्थिति को देखते हुए अभी तो ये लग रहा है कि पश्चिम बंगाल में मुख्य मुकाबला टीएमसी और बीजेपी के बीच हो सकता है।

गौरतलब है कि बंगाल में 2026 में चुनाव है और बीजेपी के लिए वहां सत्ता पाना अभी तक ख्वाब सरीखा ही रहा है। संघ से लेकर बीजेपी संगठन के पूरी ताकत लगाने के बावजूद वो ममता के किले को भेद नहीं पा रही है। 2016 विधानसभा चुनाव में टीएमसी को 211 सीटें मिली थी। बीजेपी को महज 3 सीटें मिल पाई थी। 2021 में भी ममता की पार्टी को 213 सीटें मिली। इस दौरान बीजेपी 77 सीटों के साथ मजबूत तो हुई लेकिन उसे सत्ता नहीं मिल सकी। केवल विधानसभा ही नहीं लोकसभा चुनाव में भी बंगाल में ममता के आगे बीजेपी का भगवा रथ अटकता रहा। 2019 के लोकसभा चुनाव में बीजेपी ने बंगाल में ममता को कड़ी टक्कर दी।

RNI No. GJHIN/25/A2786 Printed, Published & Owned by RAGINI JIGNESHKUMAR VAGHELA and Printed By (1) JIGNESH RASHIKBHAI GAJJAR at Vansh Corporation, A/8, Shayona Golden Estate, Shahibag, Ahmedabad - 380 004
(2) DESAI RAHUL MAHESHBHAI at Bhavani Offset, Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002. (3) HADIK MAHESHBHAI DESAI at Bhoomi Offset, Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002
and Published from B/13, Sneh Plaza Shopping Center, I.O.C. Road, Chandkheda, Ahmedabad - 382 424. Editor : JIGNESHKUMAR PATHABHAI VAGHELA

राजकोट में आगामी जनवरी में आयोजित होगी वाइब्रेंट गुजरात रीजनल कॉन्फ्रेंस (VGRC)

- सौराष्ट्र में राजकोट वैश्विक एयरोस्पेस हब के रूप में उभर रहा है
- 'वोकल फॉर लोकल' से 'ग्लोबल एक्सीलेंस' तक राजकोट में संचालित श्रीराम एयरोस्पेस प्रधानमंत्री के विजन को दे रही है नई गति
- 'मेक इन इंडिया' और 'आत्मनिर्भर भारत' का जीवंत उदाहरण और सौराष्ट्र में प्रिसीजन इंजीनियरिंग का उभरता हुआ केंद्र बन रहा है राजकोट
- मानक SOP के अनुरूप गुणवत्तापूर्ण उत्पादन से वैश्विक कंपनियों के साथ साझेदारी को बढ़ाया जा सकता है : - श्री संदीप सताणी (प्रबंध निदेशक, श्रीराम एयरोस्पेस)

(जीएनएस)। गांधीनगर : प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में भारत वैश्विक मैन्युफैक्चरिंग पावरहाउस बनने की दिशा में तीव्र गति से आगे बढ़ रहा है। इसी कड़ी में गुजरात सरकार द्वारा आगामी 8 से 9 जनवरी 2026 के दौरान राजकोट में सौराष्ट्र–कच्छ क्षेत्र के लिए वाइब्रेंट गुजरात रीजनल कॉन्फ्रेंस (VGRC) का आयोजन किया जा रहा है।

इस कॉन्फ्रेंस के साथ ही 8 से 11 जनवरी, 2026 तक वाइब्रेंट गुजरात रीजनल एक्ज़िबिशन (VGRE) भी आयोजित होगी जो पूरे कच्छ और सौराष्ट्र क्षेत्र के उद्योगों, MSMEs, सरकारी संस्थाओं एवं उभरते उद्यमियों को अपने उत्पाद, नवाचार और क्षमताओं को प्रदर्शित करने का महत्वपूर्ण मंच प्रदान करेगी।

वाइब्रेंट गुजरात के माध्यम से अनेक स्वदेशी कंपनियाँ आज 'राइजिंग स्टार' के रूप में उभरकर सामने आई हैं। ऑटो उद्योग में अपनी विशिष्ट पहचान बना चुका राजकोट अब एयरोस्पेस और स्पेस टेक्नोलॉजी के क्षेत्र में भी उल्लेखनीय योगदान दे रहा है। इसी श्रृंखला में श्रीराम एयरोस्पेस एंड डिफेंस आने वाले समय में एयरोस्पेस सेक्टर में अत्यधिक संभावनाओं के साथ नई ऊँचाइयों की ओर अग्रसर है।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के 'स्वदेशी अपनाओ', 'मेक इन इंडिया' और 'आत्मनिर्भर भारत' के संकल्पों को श्रीराम एयरोस्पेस एंड डिफेंस LLP ने व्यवहार में उतारते हुए स्थानीय क्षमता को वर्ल्ड-क्लास औद्योगिक उत्कृष्टता में बदलने का सफल प्रयास किया है। वाइब्रेंट गुजरात के माध्यम से सौराष्ट्र अब 'इनोवेशन-ड्रिवन इंडस्ट्रियल कॉरिडोर' के रूप में विकसित होने की दिशा में तेजी से आगे बढ़ रहा है।

कंपनी के प्रबंध निदेशक श्री संदीप वल्लभभाई सताणी बताते हैं कि उन्होंने अपनी कंपनी की शुरुआत वर्ष 2017 में की। वे कहते हैं, "हमें श्रीराम एयरोस्पेस के माध्यम से न्यू इंडिया की तकनीकी महत्वाकांक्षाओं को साकार करने का अवसर मिला है। मेरे पिता श्री वल्लभभाई सताणी के मार्गदर्शन में इंजीनियरिंग विशेषज्ञता की मजबूत नींव पर स्थापित यह कंपनी आज देश की चुनिंदा अग्रणी संस्थाओं में शामिल हो चुकी है।"

श्री सताणी बताते हैं कि अत्याधुनिक मशीनरी और 24×7 पावर-बैक्ड असेंबली सुविधाओं के साथ कंपनी ने गुजरात में सबसे आधुनिक और सक्षम प्रिसीजन इंजीनियरिंग इकोसिस्टम विकसित किया है। इसी कारण आज कंपनी एयरबस, बोइंग, रोल्स-रॉयस, डसॉल्ट एविएशन, इसरो, हिंदुस्तान एयरोनॉटिक्स लिमिटेड जैसी वैश्विक एयरोस्पेस कंपनियों के लिए महत्वपूर्ण एयरोस्पेस पार्ट्स की सप्लाई करने में सक्षम है।

वे आगे बताते हैं कि तकनीकी टीम के सहयोग से कंपनी ने अल्ट्रा-प्रीसिजन मशीनिंग, जटिल एयरोस्पेस टूलिंग, हाई-स्ट्रेंथ अलॉय और क्रिटिकल असेंबली जैसे अत्याधुनिक क्षेत्रों में विशेष दक्षता प्राप्त की है। साथ ही, SAC-ISRO के लिए भारत का पहला 6 माइक्रोन RMS युक्त टेराहर्ट्ज़ एंटेना और नेविगेशन एंटेना भी विकसित किया गया है। कंपनी 8-मीटर विंग फिक्चर्स, INVAR कॉम्पोजिट लेअप टूल्स, एयरो-इंजन पार्ट्स हेतु स्ट्रेच-फॉर्मिंग डाईज़, रिफ्लेक्टर पैनल्स सहित लगभग 3000 से अधिक एयरोस्पेस टूल्स की आपूर्ति कर चुकी है। इसके अतिरिक्त, TATA-Airbus C295 विमान हेतु 11.5 मीटर लंबे, 25 टन वजनी और 15,000+ हिस्सों से निर्मित लेफ्ट और राइट विंग बॉक्स असेंबली जिग्स की सफल डिलीवरी भी कंपनी द्वारा सम्पन्न की गई है जो तकनीकी क्षमता और औद्योगिक उत्कृष्टता का प्रमाण है।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के विजन का उल्लेख करते हुए श्री संदीप सताणी ने कहा कि हमारे प्रधानमंत्री जी अक्सर कहते हैं कि हर संकट अपने साथ एक नया अवसर लेकर आता है और इसी सोच ने हमें निरंतर नवाचार के लिए प्रेरित किया। इसी दृष्टि से कंपनी ने अल्ट्रा-प्रिसीजन मल्टी-एक्सिस मशीनिंग इन्फ्रास्ट्रक्चर विकसित किया है। अंतरराष्ट्रीय गुणवत्ता मानकों पर सिद्ध AS9100D प्रमाणित क्वालिटी मैनेजमेंट सिस्टम, एकीकृत फेब्रिकेशन–असेंबली–इंस्पेक्शन इकोसिस्टम तथा वैश्विक सर्वोत्तम प्रथाओं से प्रशिक्षित उच्च कौशल युक्त कार्यबल, इन सभी ने श्रीराम एयरोस्पेस को विश्वस्तरीय क्षमताओं से सुसज्जित किया है।

उन्होंने आगे कहा कि श्रीराम एयरोस्पेस वास्तव में नए भारत की उस तकनीकी आकांक्षा का प्रतीक है, जिसका स्वप्न प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्रभाई मोदी ने देखा है। आज राजकोट की धरती इंजीनियरिंग नवाचार का केंद्र बनकर उभर रही है और गुजरात भारत की मैन्युफैक्चरिंग क्रांति की अगुवाई कर रहा है। राजकोट यह प्रमाणित कर रहा है कि स्थानीय प्रतिभा की क्षमता, उद्यमियों की दूरदर्शिता और अत्याधुनिक तकनीक का मेल भारत को वैश्विक मंच पर नई शक्ति और नए आत्मविश्वास के साथ आगे बढ़ाने में सक्षम है।

भावनगर मंडल रेल प्रबंधक कार्यालय परिसर में वृक्षारोपण हरित परिसर की ओर महत्वपूर्ण कदम

(जीएनएस)। भावनगर मंडल रेल प्रबंधक कार्यालय परिसर में 30 नवंबर, 2025 (रविवार) को एक भव्य वृक्षारोपण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। परिसर को अधिक हरा–भरा, स्वच्छ एवं पर्यावरणीय संतुलन के अनुरूप विकसित करने के उद्देश्य से आयोजित इस अभियान का नेतृत्व मंडल रेल प्रबंधक श्री दिनेश वर्मा ने किया।

कार्यक्रम में अपर मंडल रेल प्रबंधक श्री हिमांशु शर्मा सहित मंडल के सभी वरिष्ठ अधिकारियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया तथा अपने-अपने हाथों से पौधे रोपित कर पर्यावरण संरक्षण का संदेश दिया।

वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक श्री अतुल कुमार त्रिपाठी ने बताया कि वृक्षारोपण पहल के अंतर्गत कार्यालय परिसर में एरेका पाम (Areca Palm) के कुल 28 पौधे लगाए गए। यह पौधा न केवल आकर्षक एवं सुशोभित स्वरूप वाला है, बल्कि प्राकृतिक वायु शोधक होने के साथ-साथ वातावरण में नमी एवं सकारात्मक ऊर्जा भी बढ़ाता है।

रेल प्रशासन का यह प्रयास कार्यालय परिसर को हरियाली से समृद्ध कर स्वस्थ एवं स्वच्छ कार्य परिवेश उपलब्ध कराने में सहायक सिद्ध होगा।

पूर्वी चंपारण में भीषण सड़क हादसा: तेज रफ्तार ट्रक ने पांच जिंदगी खत्म कीं, गुस्से में फूटा जनसैलाब

(जीएनएस)। पूर्वी चंपारण। बिहार के पूर्वी चंपारण जिले में रविवार सुबह एक ऐसा दिल दहला देने वाला हादसा हुआ जिसने पूरे इलाके को शोक और गुस्से में डुबो दिया। कोटवा थाना क्षेत्र के दीपउ मोड़ पर एक तेज रफ्तार ट्रक ने सड़क किनारे खड़े पाँच लोगों को बेरहमी से कुचल दिया। टक्कर इतनी भयानक थी कि सभी पाँचों लोगों की मौके पर ही मौत हो गई। सुबह-सुबह हुई इस दुर्घटना की खबर कुछ ही मिनटों में पूरे इलाके में फैल गई और देखते ही देखते माहौल तनावपूर्ण हो गया।

स्थानीय लोगों में जबरदस्त आक्रोश फैल गया। ग्रामीणों ने मृतकों के शव सड़क पर रखकर नेशनल हाइवे–27 को पूरी तरह जाम कर दिया। दोनों ओर किलोमीटरों लंबी लाइनें लग गईं, एंबुलेंसें तक फँस गईं और यात्रियों को घंटों तक भारी परेशानी झेलनी पड़ी। भीड़ ने साफ कहा कि जब तक चालक की तुरंत गिरफ्तारी और पीड़ित परिवारों को उचित मुआवज़ा घोषित नहीं किया जाता, जाम नहीं हटेगा।

मौके पर पहुंचे पुलिस और प्रशासन के अधिकारी लगातार भीड़ को शांत करने की अपील करते रहे, लेकिन गुस्सा इतना अधिक था कि बातचीत कई घंटों तक किसी निष्कर्ष पर नहीं पहुंच सकी।

हादसे में केवल जानें ही नहीं गईं, बल्कि कई लोग गंभीर रूप से घायल भी हुए। पुलिस के अनुसार कम से कम 12 लोग बुरी तरह जख्मी हैं जिन्हें ग्रामीणों की मदद से नजदीकी अस्पताल पहुंचाया गया। कई घायलों की हालत बेहद नाजुक बताई जा रही है, जिनमें से कुछ को मोतिहारी सदर अस्पताल रेफर किया गया है। डॉक्टरों को विशेष सतर्कता बरतने के निर्देश दिए गए हैं, क्योंकि घायलों की संख्या और स्थिति दोनों ही चुनौतीपूर्ण हैं।

स्थिति की गंभीरता को देखते हुए प्रशासन ने अतिरिक्त पुलिस बल, दंगा नियंत्रण दस्ता और आरएएफ की तैनाती कर दी है। अधिकारियों का कहना है कि भीड़ की उत्तेजना और सड़क पूरी तरह जाम होने के कारण नियंत्रण स्थापित करने में कठिनाई हो रही है, लेकिन प्रयास जारी है। ट्रक को कब्जे में ले लिया गया है और उसके चालक की तलाश के लिए एक विशेष टीम बना दी गई है।

इस बीच, ग्रामीणों ने प्रशासनिक लापरवाही के गंभीर आरोप लगाए हैं। उनका कहना है कि दीपउ मोड़ पर लंबे समय से तेज रफ्तार वाहनों के कारण दुर्घटनाएँ हो रही हैं, लेकिन न तो यहाँ स्पीड ब्रेकर लगाया गया और न ही चेतावनी संकेत। कई गांवों के लोगों ने एक स्वर में कहा कि यह मोड़ मौत का जाल बन गया है और लगातार शिकायतों के बावजूद अधिकारी चुप हैं। ग्रामीणों का साफ कहना है कि सुरक्षा उपाय लागू होने की लिखित घोषणा तक वे जाम नहीं हटाएँगे।

हाईवे पर फँसे लोगों को भारी मुश्किलों का सामना करना पड़ रहा है—अस्पतालों की ओर जाती एंबुलेंस भी जाम में अटक गईं। प्रशासन ने लोगों से शांति बनाए रखने और जांच में सहयोग करने की अपील की है।

फिलहाल पूरा इलाका तनाव, दुख और गुस्से की गिरफ्त में है, और वह एक सवाल लगातार उठ रहा है—क्या एक और हादसे का इंतज़ार करना ही प्रशासन के लिए मजबूरी है, या अब किसी ठोस

जलवायु संकट की मार में भारतीय निर्यातः एल्युमीनियम से स्टील तक उद्योगों पर बड़ा खतरा

(जीएनएस)। नई दिल्ली। भारत का निर्यात क्षेत्र पहले ही वैश्विक बाजारों और अमेरिकी टैरिफ नीतियों के दबाव में जूझ रहा है, लेकिन अब इसके सामने एक और गहराता हुआ संकट खड़ा है—जलवायु परिवर्तन। दुनिया भर में बढ़ते तापमान, अनियंत्रित मौसमीय बदलाव और कठोर होते पर्यावरणीय मानकों के चलते भारत के प्रमुख निर्यात उद्योगों के भविष्य पर गंभीर सवाल खड़े हो गए हैं। वैश्विक कंसल्टिंग फर्म BCG (Boston Consulting Group) की ताज़ा रिपोर्ट ने चेतावनी दी है कि विशेषकर एल्युमीनियम, लोहा और स्टील जैसे सेक्टर अभूतपूर्व जोखिमों का सामना कर रहे हैं। यह खतरा केवल उत्पादन तक सीमित नहीं, बल्कि लाभप्रदता, सप्लाई चेन और वैश्विक प्रतिस्पर्धात्मकता पर सीधा असर डाल रहा है।

रिपोर्ट में कहा गया है कि भारत जलवायु परिवर्तन से प्रभावित शीर्ष 10 देशों में शामिल है, और यह दबाव आने वाले वर्षों में और बढ़ने वाला है। BCG के मैनेजिंग डायरेक्टर और सीनियर पार्टनर सुमित गुप्ता के अनुसार COP30 में पेश 'क्लाइमेट रिस्क इंडेक्स 2026' की चेतावनी बेहद साफ है—अगर भारत ने अब भी रणनीतिक कदम नहीं उठाए, तो आर्थिक नुकसान इतना बड़ा हो सकता है कि कई दशकों की प्रगति तक प्रभावित हो जाए। जलवायु जोखिम अब केवल पर्यावरण का मुद्दा नहीं रहा, यह सीधा आर्थिक स्वास्थ्य और उत्पादन सुरक्षा का प्रश्न बन चुका है। भारतीय निर्यात उद्योगों पर इसका सीधा और गहरा असर पड़ रहा है। बदलते मौसम, समुद्री तूफानों, सूखे व बाढ़ जैसी चरम घटनाओं ने कई राज्यों में औद्योगिक क्षेत्रों की उत्पादन क्षमता को अस्थिर कर दिया है। BCG, RBI और WEF के संयुक्त आंकड़े दर्शाते हैं कि 2030 तक भारत की GDP का लगभग 4.5% हिस्सा सिर्फ जलवायु-जनित जोखिमों की वजह से खतरे में है। और तो और, सदी के अंत तक भारत अपनी राष्ट्रीय आय का 6.4% से 10% तक हिस्सा खो सकता है, जो किसी भी अर्थव्यवस्था के लिए विनाशकारी स्थिति है।

रिपोर्ट इस बात पर भी जोर देती है कि जलवायु संकट केवल प्राकृतिक आपदाएं नहीं लाता, यह मौजूद औद्योगिक ढांचे—कारखानों, पावर सप्लाइ, लॉजिस्टिक्स, बंदरगाहों और कच्चे माल की उपलब्धता—सबको प्रभावित करता है। कई बार एक बाढ़ या चक्रवात एक पूरे औद्योगिक बेल्ट को हफ्तों के लिए ठप कर देता है, जिसका असर वैश्विक सप्लाई चेन तक महसूस किया जाता है।

BCG का अनुमान उद्योग जगत के लिए और भी चिंताजनक है—2050 तक वैश्विक कंपनियों के EBITDA (कमाई) का 5% से 25% हिस्सा सिर्फ जलवायु जोखिमों की वजह से प्रभावित हो सकता है। इसका मतलब है कि आने वाले वर्षों में लाभ कमाना कठिन होता जाएगा, जबकि लागतें—बीमा, ऊर्जा, अनुपालन और संरचनात्मक बदलाव—तेजी से बढ़ेंगी। भारत के एल्युमीनियम, स्टील और लौह उद्योग, जो ऊर्जा-गहन सेक्टर माने जाते हैं, इस संकट की पहली पंक्ति में खड़े हैं। हालांकि भारत की कई कंपनियां अब सतत निवेश, कार्बन कटौती और हरित तकनीक अपनाने की दिशा में कदम उठा रही हैं, लेकिन विशेषज्ञों के अनुसार यह गति अभी पर्याप्त नहीं है। रिपोर्ट कहती है कि यदि भारत को निर्यात की प्रतिस्पर्धा बनाए रखनी है और रोजगार बचाना है, तो नीति-निर्माण में त्वरित और ठोस हस्तक्षेप आवश्यक है—वरना आने वाले समय में जलवायु परिवर्तन भारत की अर्थव्यवस्था के लिए सबसे बड़ा व्यवधान साबित हो

'स्वागत' ऑनलाइन : टेक्नोलॉजी के माध्यम से जन समस्या का निवारण

- 'स्वागत ऑनलाइन कार्यक्रम' पोरबंदर के मोडदर के ग्रामीणों के लिए वरदान स्वरूप सिद्ध हुआ
- 'स्वागत' कार्यक्रम' में की गई प्रस्तुति का मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल द्वारा चार दिनों के भीतर निराकरण !
- मुख्यमंत्री के 'स्वागत' कार्यक्रम से पोरबंदर के मोडदर गाँव की वर्षों पुरानी सड़क समस्या का स्थायी निवारण
- मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल द्वारा 'स्वागत' कार्यक्रम में पोरबंदर के निकट स्थित मोडदर के किसानों को सुनकर सड़क एवं भवन विभाग को निर्देश दिए जाने से चार दिनों के भीतर ही सड़क व पुल के कार्य के लिए 9 करोड़ रुपए की सैद्धांतिक स्वीकृति मिली
- पोरबंदर के पसवारी-मोडदर के बीच किसानों को खेत जाने का छोटा रास्ता मिलेगा और विद्यार्थियों को शिक्षा के लिए कुतियाणा 8 किलोमीटर नजदीक पड़ेगा
- मुख्यमंत्री ने किसानों को ध्यान से सुनकर; इसकी मुझे प्रसन्नता : लखमणभाई, किसान, मोडेदरा
- मुख्यमंत्री ने स्वागत-सत्कार किया, कल्पना नहीं थी कि ऐसा काम इतनी तेजी से होगा : राणाभाई कटारा, पशुपालक

(जीएनएस)। गांधीनगर : गुजरात में लोकप्रिय बना 'स्वागत' ऑनलाइन कार्यक्रम सुदूरवर्ती लोगों की बुनियादी समस्याओं का स्थायी निवारण ला रहा है। इसका उदाहरण है पोरबंदर जिले के मोडदर गाँव का किस्सा। पोरबंदर के कुतियाणा के पास 1200 की आबादी वाला छोटा-सा गाँव मोडदर आज खुश है और इसका कारण है 'स्वागत' ऑनलाइन कार्यक्रम। बात विस्तार से। मुख्यमंत्री के 'स्वागत' कार्यक्रम में पोरबंदर के मोडदर गाँव के लखमणभाई मोडदरा तथा अन्य किसानों ने मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल के समक्ष अपने गाँव की सड़क समस्या प्रस्तुत की। मख्यमंत्री ने ग्रामीणजनों को ध्यान से सुना। गाँव की मांग थी कि उन्हें कुतियाणा पहुँचने के लिए सड़क तथा पुल बनाकर दिए जाएँ।

मुख्यमंत्री को लगा कि ग्रामीणों की समस्या वाजिब है और इससे किसानों, विद्यार्थियों तथा अन्य ग्रामीणों की सुख-सुविधा बढ़ेगी। उन्होंने तुरंत ही इसके लिए 9 करोड़ रुपए मंजूर किए और पुल का कार्य मंजूर कर तत्काल शुरू करने के निर्देश दिए। अब मोडदर तथा पसवारी गाँव के बीच माइनर ब्रिज, क्लवर्ट तथा तीन किलोमीटर सड़क निर्माण का कार्य शुरू होगा। इसके लिए 9 करोड़ रुपए की सैद्धांतिक स्वीकृति दी गई है।

मुख्यमंत्री के 'स्वागत' कार्यक्रम में गाँव की समस्या का निवारण होने से ग्रामीणजन भावविभोर बने हैं। श्री लखमणभाई ने कहा, "हम मुख्यमंत्री से मिलकर गाँव लौटे, उसके बाद चौथे ही दिन मुख्यमंत्री कार्यालय (सीएमओ) से फोन आया कि आपकी समस्या का निराकरण हो गया है। इतना ही नहीं; इस कार्य के लिए 9 करोड़ रुपए की सैद्धांतिक स्वीकृति भी दे दी गई है। हमारे छोटे-से गाँव के लिए यह बहुत बड़ी बात है।"

लखमणभाई कहते हैं कि पिछले कई वर्षों से गाँव के लोगों की भावना थी कि कुतियाणा जाने के लिए सड़क एवं पुल का निर्माण हो। हाल में लगभग चार गाँवों को पार करके जाना पड़ता है, जिसका अंतर 20 किलोमीटर है। और फिर नदी के सामने वाले तट पर 100 से अधिक किसानों के खेत हैं। इन खेतों से भी होकर गुजरना पड़ता है। किसान छोटे रास्ते का उपयोग करते, लेकिन जान जोखिम में डालकर।

लखमणभाई कहते हैं कि गाँव के लोग पशुधन के साथ नदी में उतरकर खेत में जाते। कभी-कभी वे पतवार का उपयोग करते, जिससे डूब जाने का डर हमेशा रहता। इस समस्या से अब मुक्ति मिलेगी। यह गाँव घेड क्षेत्र का होने के कारण इस गाँव में आठ महीने नदी का पानी भरा रहता है और चार महीने ही रास्ता खुला रहता है। गाँव के लोगों ने पहली बार यह समस्या जिला स्तरीय 'स्वागत' कार्यक्रम में प्रस्तुत की। पोरबंदर कलेक्टर ने अड़चनें दूर कर पुराना रास्ता खुलवाया, लेकिन ग्रामीणों की मांग नदी पर पुल निर्माण की थी। इस संबंध में मुख्यमंत्री के 'स्वागत' कार्यक्रम में समस्या प्रस्तुत की गई और समस्या का हल निकला।

मोडदर के श्री रमेशभाई कंरगिया कहते हैं कि यह मार्ग हमारे लिए जीवनडोर समान सिद्ध होगा। विद्यार्थियों को स्कूल नजदीक पड़ेगा, किसानों को खेत और जब मरीज को तत्काल उपचार की जरूरत होगी, तब उसे अस्पताल जल्दी से पहुँचाया जा सकेगा और उसकी जान बचाई जा सकेगी।

मोडदर के पशुपालक राणाभाई कटारा मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल द्वारा किए गए 'स्वागत'-सत्कार को आज भी याद करते हैं। वे हर्ष व्यक्त करते हुए कहते हैं कि हमें इस बात का संतोष है कि मुख्यमंत्री ने हमारी समस्या समझी और उसका तत्काल निवारण किया।

मुख्यमंत्री के 'स्वागत' कार्यक्रम में मोडदर जैसे अनेक गाँवों-शहरों के नागरिकों की समस्या का समाधान हुआ है।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के गुजरात में उनके मुख्यमंत्रित्व काल में शुरू हुआ 'स्वागत' ऑनलाइन जन शिकायत निवारण कार्यक्रम आज मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल के नेतृत्व में और तेज गति से आगे बढ़ रहा है तथा 'नागरिक देवो भवः' के विचार को वास्तविक रूप दे रहा है।

कोलकाता से पकड़ा गया कफ सीरप तस्करी का मास्टरमाइंड, 25 करोड़ रुपये के फर्जी लेनदेन का पर्दाफाश

(जीएनएस)। सोनभद्र। उत्तर प्रदेश पुलिस ने कफ सीरप की अंतरराज्यीय तस्करी के बड़े नेटवर्क पर एक और जबरदस्त कार्रवाई करते हुए वाराणसी के प्रहलाद घाट निवासी भोला प्रसाद जायसवाल को कोलकाता से गिरफ्तार किया। पुलिस सूत्रों के अनुसार, भोला प्रसाद विदेश भागने की फिराक में था, तभी उसे घेराबंदी कर पकड़ लिया गया। अब उसे ट्रांजिट रिमांड पर सोनभद्र लाया जाएगा ताकि पूरे रैकेट की जांच को और गहराई दी जा सके।

पुलिस के मुताबिक, 18 अक्टूबर 2025 को सोनभद्र में दो कंटेनरों से 1,19,675 कफ सीरप की शीशियां बरामद हुई थीं। इस बड़ी बरामदगी के बाद गाजियाबाद में संयुक्त छापेमारी की गई, जिसमें चार ट्रकों से भारी मात्रा में कफ सीरप के साथ 20 लाख रुपये नकद भी बरामद हुए। जांच में यह सामने आया कि भोला प्रसाद ने मेसर्स शैली ट्रेडर्स, रांची के नाम पर नकली बिलिंग कर सैकड़ों कंटेनरों में कफ सीरप उत्तर भारत के कई जिलों में सप्लाई की। इसके जरिए उसने बड़े पैमाने पर काले बाजार में अवैध कारोबार को संचालित किया।

विशेष जांच दल ने भदोही, चंदौली, वाराणसी और सोनभद्र जिलों में करीब 25 करोड़ रुपये के फर्जी वित्तीय लेनदेन का खुलासा किया। जांच में यह भी पता चला कि जिन फर्मों के नाम पर बिलिंग की गई, उनमें से अधिकांश केवल कागजी और अस्तित्वहीन थीं। संबंधित बैंक खातों को तत्काल फ्रीज कर दिया गया।

ड्रग इंस्पेक्टर राजेश मौर्य की शिकायत पर दर्ज मामले में यह भी सामने आया कि बरकरा गांव स्थित फर्जी फर्म "मां कृपा मेडिकल" और "मेसर्स शिवक्षा प्रा. लिमिटेड" के माध्यम से 2024 से 2025 के बीच 7,53,000 फेंसाड्रिल सीरप की शीशियां काले बाजार में बेची गईं। इस अवैध कारोबार में भोला प्रसाद की भूमिका सबसे केंद्रीय पाई गई है।

भोला प्रसाद चंदौली, जौनपुर और गाजीपुर जिलों में वांछित चल रहा था। उसकी गिरफ्तारी से इस पूरे रैकेट की रीढ़ टूट गई है और पुलिस का कहना है कि उसके अन्य सहयोगियों पर भी जल्द ही कार्रवाई की जाएगी। पुलिस इस पूरे अंतरराज्यीय नेटवर्क की गहन जांच कर रही है ताकि कफ सीरप की अवैध तस्करी और फर्जीवाड़े से जुड़े सभी सूत्रों का खुलासा किया जा सके। इस गिरफ्तारी ने उत्तर प्रदेश पुलिस को कफ सीरप तस्करी के खिलाफ जारी अभियान में बड़ी सफलता दिलाई है। अधिकारियों का कहना है कि अब पूरे नेटवर्क के मामलों की जांच और सहयोगियों की गिरफ्तारी से अवैध कारोबार पूरी तरह समाप्त करने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम उठाया जाएगा। इस कार्रवाई से न केवल अवैध तस्करी की रोकथाम होगी, बल्कि आम जनता में सुरक्षा और नियमों के प्रति विश्वास भी मजबूत होगा।

उपराष्ट्रपति सी.पी. राधाकृष्णन ने एनआईटी कुरुक्षेत्र के दीक्षांत समारोह में कहा: 'मैकॉले मानसिकता' से मुक्त होकर भारत नई राह पर

(जीएनएस)। कुरुक्षेत्र। उपराष्ट्रपति सी.पी. राधाकृष्णन ने एनआईटी कुरुक्षेत्र के 20वें दीक्षांत समारोह को संबोधित करते हुए कहा कि भारत अब औपनिवेशिक सोच से बाहर निकलकर अपनी सांस्कृतिक जड़ों और परंपराओं पर आधारित आधुनिक शिक्षा मॉडल की ओर बढ़ रहा है। उन्होंने राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 का हवाला देते हुए कहा कि यह नीति देश को वैश्विक नेतृत्व की दिशा में नई रफ्तार दे रही है और युवाओं को नए अवसरों और जिम्मेदारियों के लिए तैयार कर रही है।

उपराष्ट्रपति राधाकृष्णन ने कहा कि कुरुक्षेत्र की पावन भूमि सदैव धर्म की विजय की शिक्षा देती है और यह दीक्षांत समारोह केवल डिग्री वितरण का कार्यक्रम नहीं है, बल्कि वर्षों की मेहनत, सीख और नए उत्तरदायित्वों की शुरुआत का प्रतीक है। उन्होंने छात्रों से आग्रह किया कि वे अपने ज्ञान और कौशल का उपयोग मानव कल्याण, विज्ञान, तकनीक और समाज की उन्नति के लिए करें।

राधाकृष्णन ने एआई, नवीकरणीय ऊर्जा, अंतरिक्ष अनुसंधान, जैव–प्रौद्योगिकी और सेमीकंडक्टर जैसे क्षेत्रों में तेज़ी से हो रहे बदलावों का उल्लेख करते हुए कहा कि तकनीक का उद्देश्य केवल उन्नति नहीं बल्कि मानव जीवन को सार्थक बनाना होना चाहिए। उन्होंने डिजिटल इंडिया, स्टार्टअप इंडिया और मेक इन इंडिया जैसे अभियानों का उदाहरण देते हुए कहा कि भारत से अगला गूगल, टेस्ला या स्पेस–एक्स निकल सकता है और इसे संभव बनाने में देश के शैक्षणिक संस्थान अहम भूमिका निभा सकते हैं।

उपराष्ट्रपति ने मैकॉले की औपनिवेशिक शिक्षा नीति का जिक्र करते हुए कहा कि नई शिक्षा नीति छात्रों और समाज को उस मानसिकता से पूरी तरह मुक्त कर रही है। उन्होंने एनआईटी में स्थापित 'समग्र व्यक्तित्व विकास केंद्र' की सराहना की, जहां भगवद्गीता, मानव मूल्यों, संज्ञान विज्ञान और मानसिक स्वास्थ्य पर आधारित शिक्षण मॉडल अपनाया जा रहा है। यह पहल छात्रों को न केवल तकनीकी दक्षता बल्कि सामाजिक और नैतिक जिम्मेदारियों के लिए भी तैयार कर रही है।

एनआईटी कुरुक्षेत्र की उपलब्धियों का उल्लेख करते हुए राधाकृष्णन ने बताया कि संस्थान अब तक 64 पेटेंट हासिल कर चुका है और कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित युद्ध तकनीक, रक्षा अनुसंधान तथा इसरो के चंद्रयान और मंगलयान अभियानों में महत्वपूर्ण योगदान दे रहा है। उन्होंने छात्रों को शिक्षा के साथ-साथ नवाचार, अनुसंधान और देश की सेवा के लिए प्रेरित किया।

कार्यक्रम में हरियाणा के राज्यपाल आशीम कुमार घोष, मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी, निदेशक बी.वी. रमण रेड्डी और बोर्ड ऑफ गवर्नर्स की अध्यक्ष तेजस्विनी अनंता कुमार सहित कई गणमान्य मौजूद थे। उपराष्ट्रपति ने छात्रों, शिक्षकों और संस्थान की पूरी टीम को बधाई देते हुए कहा कि इस नई शिक्षा दिशा से भारत न केवल तकनीकी और वैज्ञानिक क्षेत्र में बल्कि सामाजिक और नैतिक रूप से भी विश्व में अग्रणी बन सकता है।

इस प्रकार उपराष्ट्रपति ने शिक्षा, नवाचार और सांस्कृतिक मूल्यों के संतुलन पर जोर देते हुए स्पष्ट किया कि भारत अब नई राह पर अग्रसर है, जो औपनिवेशिक मानसिकता से मुक्त होकर अपनी जड़ों और परंपराओं के साथ आधुनिक और वैश्विक दृष्टि से सशक्त बन रहा है।

बंगाल की खाड़ी में बना चक्रवाती तूफान 'दित्वा' उत्तर की ओर बढ़ा, तमिलनाडु में तीन लोगों की मौत, समीपवर्ती राज्यों में अलर्ट जारी

(जीएनएस)। नई दिल्ली। बंगाल की खाड़ी में विकसित चक्रवाती तूफान 'दित्वा' लगातार उत्तर की ओर बढ़ रहा है और अब तमिलनाडु और पुडुचेरी तटों के पास पहुंच चुका है। मौसम विज्ञान विभाग (IMD) ने बताया कि यह तूफान लगभग सात किलोमीटर प्रति घंटा की रफ्तार से आगे बढ़ रहा है और तट से लगभग 80 किलोमीटर दूर स्थित है। अगले 24 घंटों के भीतर तूफान के उत्तर की ओर बढ़ने और तटीय क्षेत्रों पर और अधिक प्रभाव डालने की संभावना जताई जा रही है।

आईएमडी ने चेतावनी दी है कि तूफान 60, 50 और 25 किलोमीटर के भीतर तटीय इलाकों को प्रभावित कर सकता है। इस बीच, तमिलनाडु में भारी बारिश और तेज हवाओं के कारण पहले ही तीन लोगों की मौत की पुष्टि हो चुकी है। मौसम विभाग ने प्रभावित राज्यों में तत्काल सतर्कता बरतने और अनावश्यक यात्रा से बचने की सलाह जारी की है।

मौसम विभाग के अनुसार, 30 नवंबर और 1 दिसंबर को तमिलनाडु के अलावा तटीय आंध्र प्रदेश, यानम, रायलसीमा और तेलंगाना के कई इलाकों में भारी से अत्यधिक भारी बारिश होने की संभावना है। मौसम की गंभीर स्थिति को देखते हुए तमिलनाडु के कुछ जिलों में रेड अलर्ट भी घोषित किया गया है। प्रशासन ने लोगों से अपने घरों में सुरक्षित रहने, सड़कों पर यात्रा में सतर्कता बरतने और नदियों व नहरों के किनारे जाने से परहेज करने का निर्देश दिया है।

चक्रवात की गंभीरता के मद्देनजर राष्ट्रीय आपदा प्रतिक्रिया बल (NDRF) की एक 30 सदस्यीय टीम नेल्लोर में तैनात की गई है। टीम ने सभी बचाव और राहत उपकरणों की जांच पूरी कर ली है और जिला एवं राज्य प्रशासन के साथ लगातार समन्वय बनाए हुए है। एनडीआरएफ अधिकारियों ने बताया कि अब तक किसी बड़े नुकसान की सूचना नहीं मिली है, लेकिन वे पूरी तरह तैयार हैं और जैसे ही जरूरत पड़े, तुरंत राहत कार्य शुरू कर देंगे।

राज्य आपदा विभाग ने बताया कि तूफान और भारी बारिश के कारण थूथुकुडी और तंजावुर में दीवार गिरने से दो लोगों की मौत हुई। वहीं मयिलादुथुराई में बिजली का झटका लगने से 20 वर्षीय युवक की जान चली गई। राज्य मंत्री के.के.एस.एस.आर. रामचंद्रन ने कहा कि प्रशासन हालात पर लगातार नजर बनाए हुए है और लोगों को सुरक्षित रहने के निर्देश दिए गए हैं।

प्रशासन ने सभी तटीय क्षेत्रों में विशेष गश्ती और निगरानी बढ़ा दी है। स्कूल, कॉलेज और सार्वजनिक स्थल कुछ क्षेत्रों में बंद करने के निर्देश दिए गए हैं। मछुआरों और तटीय इलाकों के निवासियों को समुद्र में न जाने की चेतावनी जारी की गई है। बिजली और पानी की आपूर्ति पर भी विशेष निगरानी रखी जा रही है।

विशेषज्ञों का कहना है कि तूफान 'दित्वा' अब धीरे-धीरे उत्तर की ओर बढ़ रहा है, लेकिन अगले 24 से 48 घंटों के दौरान यह तमिलनाडु, पुडुचेरी और तटीय आंध्र प्रदेश के लिए सबसे संवेदनशील रहेगा। ऐसे में सभी प्रशासनिक इकाइयों, बचाव टीमों और स्थानीय नागरिकों को सतर्क रहने की आवश्यकता है।

इस स्थिति को देखते हुए मौसम विभाग ने लगातार अपडेट और चेतावनी जारी करने का काम तेज कर दिया है। लोगों से आग्रह किया गया है कि वे सरकारी निर्देशों का पालन करें और तूफान से होने वाले नुकसान को न्यूनतम करने के लिए सभी आवश्यक सावधानियां बरतें।

छत्तीसगढ़ के बस्तर में नक्सलवाद का पतन: हिड़मा और बसवा राजू के मारे जाने के बाद अब 'लाल सलाम' की ध्वनि घटती दिख रही है

(जीएनएस)। जगदलपुर। छत्तीसगढ़ का बस्तर क्षेत्र, जो दशकों से नक्सली हिंसा और जंगलों में आतंक का केंद्र रहा है, अब निर्णायक बदलाव की ओर बढ़ रहा है। पिछले 18 महीनों में सुरक्षा बलों की लगातार सफल कार्रवाई और बड़े नक्सली कमांडरों के खात्मे ने नक्सली संगठन की कमर लगभग तोड़ दी है। माड़वी हिड़मा और बसवा राजू जैसे शीर्ष नक्सली नेताओं के ढेर होने के बाद संगठन में केवल नौ शीर्ष कैडर बचे हैं और उनके आत्मसमर्पण या खात्मे के साथ बस्तर में नक्सलवाद का अंत होने की उम्मीद जताई जा रही है।

सुरक्षा एजेंसियों की निगाह अब उन नौ बचे हुए नक्सल नेताओं पर है, जिनमें देवजी, गणपति, मिशिर बेसरा, गणेश उइके, संग्राम, रामदेर, पापा राव, मंगतू और बारसे देवा शामिल हैं। कई पर 1 करोड़ रुपये तक का इनाम घोषित है। अधिकारी बताते हैं कि यदि ये नेता भी समाप्त हो जाते हैं या आत्मसमर्पण करते हैं, तो बस्तर में नक्सलवाद का अध्याय पूरी तरह समाप्त हो जाएगा।

पिछले वर्ष में हिड़मा सहित कई खतरनाक नक्सली कमांडरों को मुठभेड़ों में मार गिराया गया। इनमें जयराम, सुधाकर, रेणुका, रवि, राजे, मधु, नीति, रूपेश, दसरू, रणधीर और जोगन्ना जैसे नाम शामिल हैं। हिड़मा और बसवा राजू की मौत के बाद नक्सली संगठन में नेतृत्व संकट गहराया है, जिससे उनके शेष साथियों का मनोबल कमजोर हुआ है। केंद्र और राज्य सरकार के मिशन 2026 अभियान के तहत बस्तर के नक्सली प्रभाव वाले क्षेत्रों को पूरी तरह साफ़ करने का लक्ष्य रखा गया है। अबूझमाड़ में बड़े ऑपरेशनों के बाद नक्सलियों की सुरक्षित पनाहगाहें लगभग समाप्त हो चुकी हैं। सुरक्षा बलों का ध्यान अब बीजापुर और दक्षिणी बस्तर पर केंद्रित है, जहाँ अंतिम चरण के ऑपरेशन की तैयारी की जा रही है। आईजी बस्तर सुंदरराज पी के अनुसार, दंडकारण्य क्षेत्र में अब केवल 120–150 सशस्त्र नक्सली सक्रिय बचे हैं। उन्हें अंतिम बार आत्मसमर्पण का विकल्प दिया गया है, अन्यथा सुरक्षा बल किसी भी स्थिति में कार्रवाई करेंगे।

हिड़मा के मारे जाने के बाद नक्सली संगठन में देवजी को शीर्ष नेता माना जा रहा है। हालांकि उनकी स्थिति को लेकर विरोधाभासी जानकारी सामने आई है। नक्सलियों ने हाल ही में दावा किया कि पुलिस ने देवजी को उसके 50 साथियों के साथ गिरफ्तार किया है। सुरक्षा एजेंसियां इसे नक्सलियों की रणनीति या भ्रामक सूचना मान रही हैं।

दंतेवाड़ा जिले में डीवीसीएम और एसीएम कैडर के 37 नक्सलियों ने आज दंतेवाड़ा एसपी गौरव राय के समक्ष आत्मसमर्पण किया। इनमें 27 नक्सलियों पर कुल 65 लाख रुपये का इनाम घोषित है। आत्मसमर्पित 37 में कई ऐसे नक्सली भी शामिल हैं, जो पहले मिनपा में पुलिस पार्टी पर फायरिंग कर 26 जवानों के बलिदान और 20 जवानों को घायल कर हथियार एवं गोला बारूद लूटने की वारदात में शामिल थे। इनमें कुछ ने एसजेडसीएम कैडर की महिला कमांडर कमलेश की गार्ड के रूप में कार्य किया था।

विशेषज्ञों का कहना है कि हिड़मा और बसवा राजू के खात्मे के बाद नक्सली संगठन की रीढ़ टूट गई है और आत्मसमर्पण की प्रक्रिया तेजी से बढ़ रही है। यदि शेष शीर्ष नेताओं का अध्याय भी समाप्त हो जाता है, तो बस्तर में नक्सलवाद के 40 साल पुराने अध्याय का अंत होना लगभग निश्चित माना जा सकता है। सुरक्षा बलों और स्थानीय प्रशासन ने मिलकर नक्सली हिंसा को समाप्त करने और क्षेत्र में विकास के रास्ते खोलने की दिशा में निर्णायक कदम उठाए हैं।

इससे बस्तर में शांति और सामान्य जीवन की बहाली की संभावना बढ़ी है और स्थानीय लोगों में उम्मीद की नई किरण दिखाई दे रही है। 'लाल सलाम' की गूँज अब धीरे-धीरे फीकी पड़ती दिख रही है, और विकास तथा सुरक्षा के नए युग की शुरुआत होने को है।

सूर सरोवर की कीठम झील पर लौटे परदेशी प्रवासी पक्षी, जैव विविधता का अद्भुत मेला लगा आगरा में

(जीएनएस)। आगरा। जैसे ही सर्दियों का मौसम दस्तक देता है, कीठम झील में परदेशी प्रवासी पक्षियों का कारवां लौट आता है और झील एक बार फिर जीवंत हो उठती है। सूर सरोवर पक्षी विहार, जिसे रामसर साइट का दर्जा प्राप्त है, इन दिनों रूस, यूक्रेन, चीन, मंगोलिया और साइबेरिया से उड़कर आने वाले हजारों किलोमीटर दूर के मेहमानों से आबाद है। इस बार झील में रोजी पेलिकन और डालमेशन पेलिकन की उपस्थिति ने पर्यटकों और पक्षी प्रेमियों के उत्साह को और बढ़ा दिया है। इन विदेशी पक्षियों का आगमन न केवल झील की रौनक बढ़ा रहा है, बल्कि यह जैव विविधता के महत्व को भी उजागर कर रहा है।

पर्यटक और शोधकर्ता इस समय झील पर अपनी निगाहें गड़ाए हुए हैं। शांत जल, चारों ओर फैले हरित क्षेत्र और पक्षियों के मधुर कलरव ने कीठम झील को सर्दियों के सबसे खूबसूरत बर्ड-वॉचिंग स्थलों में से एक बना दिया है। सूर सरोवर बर्ड सेंचुरी के रेंजर अंकित यादव ने बताया कि पर्यटकों की बढ़ती संख्या को देखते हुए पक्षियों की सुरक्षा को प्राथमिकता दी जा रही है। गश्त बढ़ाई गई है और पक्षियों की गतिविधियों, संख्या और व्यवहार पर निरंतर निगरानी रखी जा रही है ताकि उनके प्राकृतिक आवास और पर्यावरणीय संतुलन को सुरक्षित रखा जा सके।

कीठम झील जैव विविधता का एक महत्वपूर्ण केंद्र है। उत्तर प्रदेश के दस रामसर स्थलों में शामिल इस झील को अंतरराष्ट्रीय महत्व का वेटलैंड माना जाता है। 1991 में इसे वन्यजीव अभयारण्य घोषित किया गया और आज यह आठ वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में फैला हुआ है, जिसमें 126 से अधिक प्रजातियों के पक्षियों का घर है। प्राकृतिक टापू, स्वच्छ जल और पर्याप्त भोजन प्रवासी पक्षियों के लिए अनुकूल वातावरण प्रदान करते हैं, जो हर वर्ष उनके आगमन को बढ़ावा देता है। 2025 के एशियन वाटरबर्ड सेंसस में यहां 3,839 जलपक्षी दर्ज किए गए, जो पिछले वर्ष की तुलना में 1,500 से अधिक हैं।

इस बार कीठम झील में बार-हेडेड गूज, नोर्दन पिनटेल, कॉमन टील, ग्रेट कोर्मोरेंट, नोर्दन शोवलर, पाइड एवोसेट, कॉमन पोचार्ड, विस्लिंग टील, कॉटन पिग्मी गूज जैसी प्रजातियों के साथ ही कई संकटग्रस्त प्रजातियों की उपस्थिति भी दर्ज की गई है। इनमें डालमेशन पेलिकन, ब्लैक-नेक्ड स्टॉर्क, पेंटेड स्टॉर्क, ब्लैक-हेडेड आईबिस और रिवर टर्न शामिल हैं। इस जैव विविधता ने सूर सरोवर को वैज्ञानिकों और शोधकर्ताओं के लिए भी विशेष महत्व का केंद्र बना दिया है।

डियर और मॉनिटर लिज़र्ड जैसी प्रजातियों का दृश्य भी पर्यटकों को आकर्षित करता है। जैसे-जैसे तापमान घटता है और सर्दी बढ़ती है, प्रवासी पक्षियों की संख्या और भी बढ़ने की संभावना है। फिलहाल रोजी पेलिकन, डालमेशन पेलिकन, सारस क्रेन और बार-हेडेड गूज झील की रौनक बढ़ा रहे हैं। इसके अलावा अन्य विदेशी पक्षियों के आगमन का सिलसिला लगातार जारी है। इस अद्भुत प्राकृतिक दृश्य ने सूर सरोवर को न केवल आगरा बल्कि पूरे उत्तर भारत का एक प्रमुख बर्ड-वॉचिंग और पर्यटक स्थल बना दिया है।

कीठम झील पर परदेशी प्रवासी पक्षियों का आगमन न केवल पर्यटकों के लिए आनंद का स्रोत है, बल्कि यह पर्यावरणीय जागरूकता और जैव विविधता संरक्षण का संदेश भी देता है। स्थानीय प्रशासन और वन विभाग के प्रयासों से पक्षियों की सुरक्षा सुनिश्चित की जा रही है, ताकि आने वाले वर्षों में भी यह प्राकृतिक धरोहर अपनी पूरी महिमा के साथ जीवंत रह सके।

श्रीलंका में चक्रवाती तूफान दितवाह का कहर, 200 से अधिक की मौत, लाखों लोग बेघर

(जीएनएस)। कोलंबो। हिंद महासागर में उत्पन्न हुए शक्तिशाली चक्रवाती तूफान दितवाह ने श्रीलंका में भारी तबाही मचाई है। बाढ़ और भूस्खलन के कारण अब तक 200 से अधिक लोगों की मौत हो चुकी है और दर्जनों लोग लापता हैं। प्रशासन ने आपदा प्रभावित आंकड़ों का अनुमान लगाया है कि लगभग 9,98,918 लोग प्रभावित हुए हैं और लाखों लोग अपने घरों से बेघर हुए हैं। ग्रामीण और तटीय क्षेत्रों में कई मकान पूरी तरह से तबाह हो गए हैं, साथ ही सड़क, पुल और अन्य बुनियादी ढांचे को गंभीर नुकसान पहुंचा है।

रविवार को श्रीलंका के राष्ट्रपति अनुरा कुमारा दिसानायके ने पूरे देश में आपातकाल की घोषणा की और अंतरराष्ट्रीय समुदाय से सहायता की अपील की। राहत कार्यों के लिए भारतीय वायुसेना ने तत्काल कदम उठाया और दो विमान कोलंबो में राहत सामग्री पहुँचाने के लिए रवाना किए। एनडीआरएफ के 80 कर्मियों को ऑपरेशन 'सागर बंधु' के तहत श्रीलंका भेजा गया, जिनमें दो विशेष तलाश और बचाव दल शामिल थे। भारत ने इस आपदा में हर संभव सहायता देने का भरोसा दिया। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भी ट्वीट कर कहा कि भारत श्रीलंकाई जनता के साथ खड़ा है और हर जरूरी मदद उपलब्ध कराएगा।

अंतरराष्ट्रीय समुदाय भी सक्रिय हो गया है। अमेरिका ने विश्व खाद्य कार्यक्रम (WFP) के माध्यम से राहत सामग्री उपलब्ध कराई और अमेरिकी राजदूत जूली चंग ने ट्वीट कर कहा कि अमेरिका श्रीलंकाई जनता के साथ मजबूती से खड़ा है। तूफान के कारण कोलंबो हवाई अड्डे पर फंसे 320 से अधिक भारतीय नागरिकों को सुरक्षित भारत लौटाया गया। भारतीय उच्चायोग और भारतीय वायुसेना के अधिकारियों ने समन्वय कर उन्हें भंडारनायके अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे से सुरक्षित निकाला।

चक्रवात के कारण श्रीलंका में पानी के तेज बहाव और भूस्खलन ने जीवन और संपत्ति को भारी नुकसान पहुंचाया। बाढ़ के चलते कई इलाके कट-ऑफ हो गए हैं और राहत कार्यों में कठिनाई उत्पन्न हो रही है। स्वास्थ्य और स्वच्छता की स्थिति भी गंभीर बनी हुई है, जिससे संभावित महामारी का खतरा मंडरा रहा है। सरकार ने तटीय और पहाड़ी क्षेत्रों में फंसे लोगों के लिए विशेष राहत शिविरों का संचालन शुरू किया है।

विशेषज्ञों के अनुसार, दितवाह तूफान की तीव्रता और अनुमानित मार्ग को देखते हुए अगले 48 घंटों में प्रभावित क्षेत्रों में आपदा राहत और पुनर्वास कार्यों की गति बढ़ाने की आवश्यकता है। राहत कार्यों में स्थानीय प्रशासन, सेना, एनडीआरएफ, भारतीय सहायता टीम और अंतरराष्ट्रीय संगठन मिलकर काम कर रहे हैं। इस तबाही ने श्रीलंका में प्राकृतिक आपदाओं के प्रति तैयारियों की जरूरत को फिर से उजागर कर दिया है। तूफान के मलबे और बाढ़ के जल स्तर का आकलन जारी है। प्रभावित क्षेत्रों में बिजली और संचार नेटवर्क ठप हो गए हैं, जिससे राहत और बचाव अभियान में और चुनौती उत्पन्न हो रही है। विशेषज्ञों ने चेताया है कि आने वाले दिनों में बारिश का खतरा भी बना रह सकता है, जिससे राहत कार्य और अधिक जटिल हो सकते हैं। इस आपदा ने स्थानीय और अंतरराष्ट्रीय समुदाय के लिए मानवीय सहायता की तत्काल आवश्यकता को स्पष्ट कर दिया है।

मतदाता पंजीकरण से पहले नागरिकता की जांच करना चुनाव आयोग का संवैधानिक अधिकार : सुप्रीम कोर्ट में हलफनामा

(जीएनएस)। नई दिल्ली। चुनाव आयोग ने सुप्रीम कोर्ट में नया हलफनामा दाखिल कर स्पष्ट किया है कि किसी भी व्यक्ति को मतदाता सूची में शामिल करने से पहले उसकी भारतीय नागरिकता की पुष्टि करना आयोग का संवैधानिक अधिकार और कर्तव्य है। आयोग ने अपने हलफनामे में कहा कि यह अधिकार और जिम्मेदारी जन प्रतिनिधित्व अधिनियम, 1950 में निहित है और इसे सुनिश्चित करना लोकतांत्रिक प्रक्रिया की विश्वसनीयता के लिए अनिवार्य है। चुनाव आयोग ने बताया कि मतदाता सूची को शुद्ध, पारदर्शी और भरोसेमंद बनाए रखना उसकी प्राथमिक जिम्मेदारी है। इसके लिए नागरिकता की जांच अनिवार्य है क्योंकि केवल भारतीय नागरिक ही मतदाता बन सकते हैं। पंजीकरण से पहले दस्तावेजों और सूचनाओं का सत्यापन प्रक्रिया का अभिन्न हिस्सा है। आयोग ने यह भी स्पष्ट किया कि मतदाता सूची में किसी भी व्यक्ति को शामिल करने या हटाने से पहले उचित जांच और सत्यापन का पालन किया जाना अनिवार्य है।

हाल ही में दाखिल याचिकाओं में मतदाता सूची में कथित अनियमितताओं और नागरिकता संबंधी सवाल उठाए गए थे। चुनाव आयोग ने हलफनामे में इन सभी सवालों का जवाब देते हुए कहा कि पूरे देश में क्रमवार जांच (SIR – Systematic Inquiry and Review) कराई जाएगी ताकि किसी भी प्रकार की अनियमितता या नागरिकता संबंधी विवाद उत्पन्न न हो। सुप्रीम कोर्ट इस मामले पर आगे सुनवाई करेगा और आयोग की जिम्मेदारियों और अधिकारों की पुष्टि करेगा।

चुनाव आयोग ने पहले ही सुप्रीम कोर्ट को स्पष्ट किया था कि आधार कार्ड का उपयोग केवल पहचान सत्यापन के लिए किया जा रहा है, न कि नागरिकता प्रमाण या मतदाता सूची में नाम जोड़ने/हटाने के लिए। आयोग ने अपने अधिकारियों को निर्देश दिए हैं कि धारा 23(4) के तहत मतदाता सूची में नाम जोड़ने या हटाने के लिए आधार कार्ड का प्रयोग न किया जाए। इसके अलावा, आयोग ने यह भी कहा कि सभी राज्य निर्वाचन आयोगों और संबंधित अधिकारियों को नागरिकता जांच के प्रामाणिक दस्तावेजों पर भरोसा करना होगा और प्रत्येक आवेदन की विस्तृत समीक्षा करनी होगी।

चुनाव आयोग के अनुसार, इस कदम से मतदाता सूची और भी पारदर्शी और भरोसेमंद बनेगी। आयोग का उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि केवल योग्य भारतीय नागरिक ही मतदान में भाग लें और लोकतंत्र की प्रक्रिया में किसी भी प्रकार की गड़बड़ी या धोखाधड़ी न हो। सुप्रीम कोर्ट के निर्देशों और आयोग की सावधानीपूर्ण जांच के बाद आगामी चुनावों में मतदाता सूची की विश्वसनीयता और सुरक्षा दोनों मजबूत होंगी।

नाम बदलने से ज्यादा जरूरी है सोच में बदलाव: सीएम स्टालिन का केंद्र पर हमला

(जीएनएस)। चेन्नई। केंद्रीय गृह मंत्रालय द्वारा देशभर के राजभवनों का नाम बदलकर 'लोकभवन' और राज निवासों का नाम 'लोक निवास' करने के निर्देश जारी करने के बाद तमिलनाडु के मुख्यमंत्री और डीएमके अध्यक्ष एम.के. स्टालिन ने तीखी प्रतिक्रिया दी है। सीएम स्टालिन ने इसे केवल दिखावे की कोशिश करार देते हुए कहा कि लोकतांत्रिक मूल्यों और संवैधानिक आदर्शों के पालन के लिए मानसिकता में बदलाव ज़रूरी है। उनका कहना है कि केवल नाम बदलने से असली बदलाव नहीं आता और जनता के लिए वास्तविक मंच केवल विधानसभाएं ही हैं।

स्टालिन ने सोशल मीडिया पोस्ट में केंद्र पर सवाल उठाते हुए कहा कि जो लोग लोकतांत्रिक संस्थाओं और विधायिकाओं का सम्मान नहीं करते, उनके लिए राजभवन का नाम बदलकर 'पीपुल्स पैलेस' करना केवल जनता की आंखों में धूल झोंकने जैसा है। उन्होंने जोर देकर कहा कि केवल नामकरण के माध्यम से जनता के विश्वास को बहाल नहीं किया जा सकता। असली बदलाव तभी संभव है जब राजनीतिक नेतृत्व और प्रशासन की सोच में परिवर्तन आए और जनता के प्रति संवेदनशीलता बढ़े।

केंद्र के निर्देश के बाद चेन्नई के गिंडी स्थित राजभवन का नाम अब 'लोकभवन' कर दिया गया है। यह पहल राज्यपाल आर.एन. रवि की देखरेख में की गई, जबकि स्टालिन सरकार और राज्यपाल के बीच पहले से ही कई नीतिगत और प्रशासनिक मामलों को लेकर तनाव बना हुआ है। विशेषकर विधानसभा द्वारा पारित विधेयकों के अनुमोदन और राज्य के संवैधानिक अधिकारों को लेकर दोनों के बीच मतभेद देखने को मिलते रहे हैं। सीएम स्टालिन ने स्पष्ट किया कि नाम बदलना केवल प्रतीकात्मक कदम है और असली परिवर्तन राजनीतिक मानसिकता, लोकतांत्रिक आदर्शों, और जनता के प्रति जवाबदेही में होना चाहिए। उन्होंने कहा कि जब तक राज्य और केंद्र स्तर पर नीति, निर्णय और व्यवहार में बदलाव नहीं आएगा, तब तक केवल भवनों और पदों के नाम बदलने से कोई वास्तविक सुधार संभव नहीं है। स्टालिन के अनुसार, लोकतंत्र की मजबूती और जनता की भागीदारी सुनिश्चित करने के लिए राजनीतिक सोच और शासन शैली में बदलाव अनिवार्य है, वरना यह नामकरण सिर्फ दिखावे तक ही सीमित रहेगा।